सी एम एफ आर आइ
CMFRI

भाकृअनुप
ICAR

ICAR - CENTRAL MARINE FISHERIES RESEARCH INSTITUTE
PLATINUM JUBILEE YEAR-2017

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

सं. 152 जनवरी - मार्च 2017 ISSN 0972-2386

कडलमीन

सी एम एफ आर आइ समाचार

http://www.cmfri.org.in

प्लेटिनम जयंती का उद्घाटन
कृपया पृष्ठ 3 देखें

हर कदम, हर डगर
किसानों का हमसफर
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद
Agrisearch with a human touch

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद
केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान
पी.बी. सं. 1603, एरणाकुलम नोर्त पी.ओ., कोचीन - 682 018, केरल, भारत

विषय सूची

भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ के प्लेटिनम जयंती समारोह का प्रारंभ	3
अनुसंधान मुख्य अंश	13
प्रशिक्षण कार्यक्रम	15
प्रकाशन	17
राजभाषा कार्यान्वयन	18
प्रदर्शनियाँ	20
विशिष्ट व्यक्तियों का दौरा	21
पुरस्कार	21
कृषि विज्ञान केन्द्र (एरणाकुलम) समाचार	22
कार्यक्रम में सहभागिता	23
मानव संसाधन विकास	25
कार्मिक समाचार	25

प्रकाशक

डॉ. ए. गोपालकृष्णन

निदेशक

भा कृ अनु प-केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान
पोस्ट बोक्स सं. 1603, एरणाकुलम नोर्त पी.ओ.
कोच्ची - 682 018, केरल, भारत
दूरभाष: 0484-2394867
फैक्स: 91-484-2394909
ई-मेल: director@cmfri.org.in
वेबसाइट: www.cmfri.org.in

संपादक

डॉ. यू. गंगा

संपादकीय मंडल

डॉ. रेखा जे. नायर
डॉ. आर. जयभास्करन
श्री सुबल कुमार राउल
डॉ. एन.एस. जीना
श्रीमती पी. गीता
डॉ. के.ए. सजीला
श्री अजु के. राजु

संपादन सहायता

श्री अरुण सुरेन्द्रन
श्री सी.वी. जयकुमार
श्री पी.आर. अभिलाष
श्री वी.एच. वेणु

हिन्दी संपादन

श्री नवीन कुमार यादव
श्रीमती ई.के. उमा

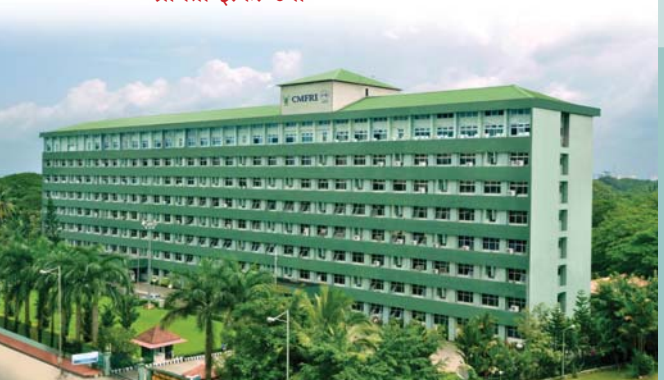

निदेशक कहते हैं

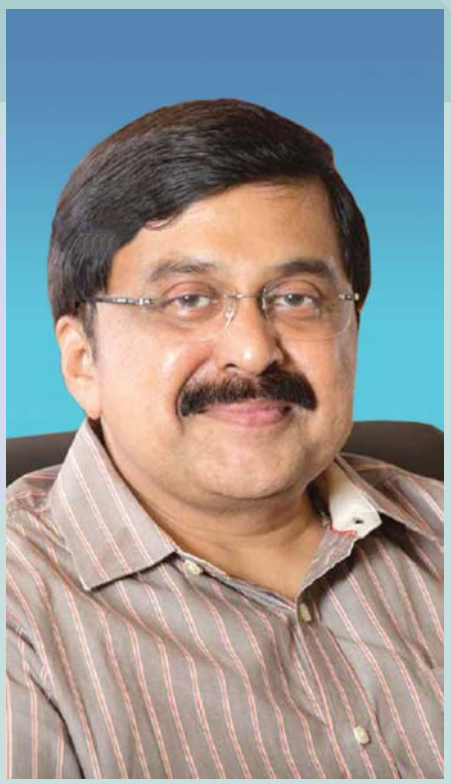

सभी को हार्दिक अभिवादन!

वर्ष 2017 में संस्थान प्लेटिनम जयंती मना रहा है और यह उत्सव का उचित समय भी है। वर्ष 1947 में स्थापित संस्थान ने समुद्री प्रग्रहण एवं पालन मात्स्यिकी में सशक्त बहु विषयी अभिगम विकसित किया और बाद में संस्थान विश्व में अग्रणी उष्णकटिबंधनम समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान के रूप में उभरा है। हाल ही में पश्चिम बंगाल के दिघा में नये अनुसंधान केन्द्र का प्रारंभ किया गया है, जो समुद्री मात्स्यिकी क्षेत्र के क्षेत्रीय मामलों को बेहत्तर और स्पष्ट ढंग से व्यक्त कर सकता है। संस्थान के वैज्ञानिक विभिन्न प्रकार के उत्पादों के विकास में लगे हुए हैं, जो mKrishi® फिशरीस, मछली अवतरण केन्द्रों पर जी आइ एस डाटाबेस और समुद्री शैवालों से न्यूट्रास्यूटिकल के क्षेत्र में उपयोग किए जा सकते हैं। वाणिज्यिक महत्व द्विकपाटियों के संतति उत्पादन में सफलता पायी गयी और पख मछलियों में, उचित प्रकार के डिंभक खाद्य, मछली स्वास्थ्य और स्फुटनशाला के नयाचारों पर वैज्ञानिकों द्वारा किए गए अनुसंधान प्रयासों के फलस्वरूप संतति उत्पादन में सफलता मिली। स्वच्छ भारत अभियान गतिविधियों के भाग के रूप में, मछुआरों और आम लोगों के बीच समुद्री प्रदूषण और इसके विपरीत प्रभाव के बारे में जागसक किये जाने का प्रयास किया गया जिससे स्वच्छ और स्वस्थ भारत का निर्माण किया जा सकेगा। आगामी वर्षों में और भी अधिक सफलताओं की प्राप्ति के लिए सभी को शुभकामनाएं!

अ.गोपाल

ए. गोपालकृष्णन
निदेशक

भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ के बारे में

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के अधीन कोच्ची में स्थापित केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान समुद्री मात्स्यिकी और समुद्र कृषि में अनुसंधान और प्रशिक्षण के लिए समर्पित सर्वप्रमुख अनुसंधान संस्थान है।

सी एम एफ आर आइ के तीन क्षेत्रीय केन्द्र जो कि मंडपम कैंप, विशाखपट्टणम और वेरावल तथा आठ अनुसंधान केन्द्र भारत की तट रेखा में कार्यरत हैं जो देश के समुद्रवर्ती राज्यों को समुद्री मात्स्यिकी नीति का अनुपालन करने में सहायता प्रदान करते हैं।

भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ के प्लेटिनम जयंती समारोह का प्रारंभ

केरल के माननीय राज्यपाल जस्टिस (सेवानिवृत्त) पी.सदाशिवम ने 18 फरवरी, 2017 को संस्थान के एक वर्ष लंबे प्लेटिनम जयंती समारोह का उद्घाटन किया। समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान स्टेशन के रूप में 3 फरवरी, 1947 को स्थापित संस्थान के अब 11 क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र मंडपम कैंप, विशाखपट्टणम, वेरावल, मुम्बई, चेन्नई, कोषिकोड, कारवार, तूत्तुकुडी, विषिंजम, मंगलूरु और दिघा में और इनके अतिरिक्त 15 क्षेत्र केन्द्र देश के तटीय क्षेत्र में और एक कृषि विज्ञान केन्द्र एरणाकुलम के नारक्कल में कार्यरत हैं।

अपने भाषण में राज्यपाल ने मात्स्यिकी सेक्टर में अनुसंधान के दौरान मछुआरों तथा मछली पालनकारों द्वारा सामना की जाने वाली समस्याओं का निराकरण करने के लिए वैज्ञानिकों को आह्वान किया। मछली उत्पादन बढ़ाए जाने हेतु देश व्यापक तौर पर खुला सागर पिंजरा मछली पालन लोकप्रिय बनाए जाने में किए गए प्रयासों के लिए उन्होंने भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ की परामर्श की। राज्यपाल ने मोटापा रोकने के लिए विकसित न्यूट्रास्यूटिकल उत्पाद कडलमीन एन्टी-हाइपर कोलेस्ट्रोलिमिक एक्स्ट्रैक्ट और समुद्र में मछली प्रजातियों की पहचान के लिए विकसित मोबाइल ऐप फिश फाइन्डर पद I का लोकार्पण किया। इस अवसर पर भारतीय डाक विभाग द्वारा नए डाक लिफ़ाफे और संस्थान के प्रकाशनों का विमोचन भी किया गया। डॉ.जे.के.जेना, उप महानिदेशक (मात्स्यिकी), भा कृ अनु प ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। डॉ.ए.जयतिलक, आइ ए एस, अध्यक्ष, एम पी ई डी ए ने आशीर्वचन दिया। सुश्री सुमती रविचन्द्रन, महा डाकपाल (केरल) भी उपस्थित थी। डॉ.ए.गोपालकृष्णन, निदेशक ने संस्थान की भविष्य की अनुसंधान योजनाओं, जिनमें यूनाइटेड नेशन्स

मुख्य अतिथि और विशिष्ट व्यक्तियों का पारंपरिक स्वागत करने का दृश्य

निदेशक मुख्य अतिथि का स्वागत करते हुए

डॉ. ए. गोपालकृष्णन, निदेशक द्वारा स्वागत भाषण

उप महानिदेशक (मात्स्यिकी) भा कृ अनु प, निदेशक के साथ

डॉ. जयतिलक, अध्यक्ष, एम पी ई डी ए द्वारा आशीर्वचन

डॉ. जे.के. जेना, उप महानिदेशक, भा कृ अनु प द्वारा भाषण

फ्रेमवर्क कन्वेन्शन ऑन क्लाइमेट चेंज (यु एन एफ सी सी सी) के थर्ड नेशनल कम्यूनिकेशन (टी एन सी) के भाग के रूप में देश की समुद्री मात्स्यिकी में जलवायु परिवर्तन के प्रभाव, सुभेद्यता और अनुकूलन की कार्यनीतियों का संबोधन करने हेतु पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की सहभागिता की एक प्रमुख परियोजना भी सम्मिलित है, की घोषणा की। उन्होंने यह भी कहा कि समुद्री संवर्धन नीति तैयार की जा रही है और उपग्रह दूरसंवेदन प्रौद्योगिकी के समर्थन से वेलापवर्ती मछली जीवसंख्या के आकलन का प्रतिमान विकसित किया जा रहा है। कार्यक्रम के दौरान भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ के भूतपूर्व निदेशकों डॉ. ई.जी. सैलास, डॉ. पी.एस.बी.आर. जेम्स, डॉ. वी.एन. पिल्लै, प्रोफसर (डॉ.) मोहन जोसफ मोडयिल, डॉ. जी. सैदा रावु और संस्थान से सेवानिवृत्त हुए वैज्ञानिकों और अधिकारियों ने कार्यक्रम की शोभा बदामी। इस दौरान डॉ. के. गोपकुमार, भूतपूर्व उप महानिदेशक (मात्स्यिकी), भा कृ अनु प, डॉ. वी.वी. सुगुणन, भूतपूर्व सहायक महानिदेशक, भा कृ अनु प, डॉ. श्रीनिवास गोपाल, भूतपूर्व निदेशक, भा कृ अनु प-सी आइ एफ टी, प्रोफसर (डॉ.) एन.आर. मेनोन, एमरिटस प्रोफसर, सी यु एस ए टी, प्रोफसर (डॉ.) ए. रामचन्द्रन, कुलपति, के यु एफ ओ एस, डॉ. (श्रीमती) एस. गिरिजा, निदेशक, निफैट और राज्य मात्स्यिकी विभाग के वरिष्ठ अधिकारी गण भी उपस्थित थे।

विभिन्न क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्रों में भी प्लेटिनम जयंती समारोह मनाया गया। विषिंजम अनुसंधान केन्द्र में डॉ. एम.के. अनिल के नेतृत्व में आयोजित समारोह में केन्द्र से सेवानिवृत्त कर्मचारियों को सम्मानित किया गया और इसके बाद आयोजित

सभा में विशिष्ट व्यक्तियों का दृश्य

निदेशक प्लेटिनम जयंती समारोह के मुख्य अतिथि का सम्मान करते हुए

प्लेटिनम जयंती लोगो का लोकार्पण

न्यूट्रास्यूटिकल कडलमीन ™ ACe का लोकार्पण

सी एम एफ आर आइ के प्रकाशनों का लोकार्पण

पोस्टल स्टाम्प का लोकार्पण

"खुली सभा" में केन्द्र की समुद्री जलजीवशाला "सागरिका" में निशुल्क में प्रवेश दिया गया। मद्रास और मांगलूर अनुसंधान केन्द्रों में 3 फरवरी 2017 को 70वां स्थापना दिवस मनाया गया और स्कूल के छात्रों एवं इच्छुक सार्वजनिक लोगों के लिए "खुली सभा" आयोजित की गयी। टूटिकोरिन अनुसंधान केन्द्र में उप जिलाधीश श्री दीपक जेकब, आइ ए एस, तूत्तुकुडी ने डॉ. जी. सुगुमार, डीन, मात्स्यिकी कॉलेज एवं अनुसंधान संस्थान, तूत्तुकुडी की और श्री नवदीप राज, कमान्डन्ट, तट रक्षक, टूटिकोरिन की उपस्थिति में कार्यक्रम का उद्घाटन किया। इस दौरान दिनांक 2 फरवरी 2017 को स्कूल के छात्रों के लिए "हरित ऊर्जा-अवसर और चुनौतियाँ" विषय पर भाषण प्रतियोगिता और समुद्री जैवविविधता और इसका परिरक्षण विषय पर चित्र रचना प्रतियोगिता आयोजित की गयीं। मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र में डॉ. पी.एस.बी.आर. जेम्स, भूतपूर्व निदेशक, भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ ने समारोह का उद्घाटन किया। प्रोफसर एम. सालिहु, भूतपूर्व कुलपति, मदुरै कामराज विश्वविद्यालय सभा में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे।

सभा में विशिष्ट व्यक्तियों का दृश्य

कारवार अनुसंधान केन्द्र में 6 फरवरी, 2017 को उत्तर कन्नड़ जिले के माननीय उप आयुक्त श्री एस.एस. नकुल ने श्री पी.एम. टन्डेल, भूतपूर्व सदस्य, भारतीय तटीय जलजीव पालन प्राधिकरण, श्री एस.एल. योगेश, जिला प्रबंधक, उत्तर कन्नड़, नबार्ड, श्री एम.एल. दोड्डामणी, मात्स्यिकी उप निदेशक, कारवार और श्री गोमस, सी ई ओ, बी एफ एफ डी ए, गोवा की उपस्थिति में "खुली सभा" का उद्घाटन किया। वेरावल में डॉ. अजय कुमार, आइ ए एस, जिलाधीश एवं जिला मजिस्ट्रेट, गिर-सोमनाथ जिला और डॉ. पोल पान्डियन, मात्स्यिकी विकास आयुक्त, भारत सरकार ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया।

भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ में 70 वीं वर्ष समारोह

मुख्य अतिथि प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुए

भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ में स्थापना दिवस समारोह

स्कूल के छात्र समुद्री चट्टान प्रदर्शनी का करते हुए

समुद्री मछली विविधता प्रदर्शनी

मुख्यालय की खुली सभा में पिंजरा मछली पालन पर प्रदर्शनी

मुख्यालय के समुद्री जैव विविधता संग्रहालय की प्रदर्शनी

कालिकट अनुसंधान केन्द्र की खुली सभा में समुद्री मछली हैचरी की प्रदर्शनी

विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केन्द्र में खुली सभा

मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र में भूतपूर्व निदेशक डॉ. पी.एस.बी.आर. जेम्स स्थापना दिवस समारोह का उद्घाटन करते हुए

कारवार अनुसंधान केन्द्र में मुख्य अतिथि को कार्यविधियों का विवरण देते हुए

मद्रास अनुसंधान केन्द्र में खुली सभा के उद्घाटन का दृश्य

वेरावल क्षेत्रीय केन्द्र में समारोह का दृश्य

तूत्तुकुड़ी अनुसंधान केन्द्र में खुली सभा के दौरान मुख्य अतिथि वैज्ञानिकों के साथ

विषिंजम अनुसंधान केन्द्र में कार्मिकों के साथ सेवानिवृत्त कर्मचारियों का दृश्य

मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र में भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ वॉलीबॉल रॉलिंग ट्रोफी विजेताओं का दृश्य

मांगलूर अनुसंधान केन्द्र की खुली सभा में स्कूल के छात्र

पश्चिम बंगाल के दिघा में नए क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र का प्रारंभ

पश्चिम बंगाल और ओडीषा की अनुसंधान एवं विकास की आवश्यकताओं की पूर्ति करने के उद्देश्य से पश्चिम बंगाल के दिघा में भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ के 11वें क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र का प्रारंभ किया गया। उद्घाटन कार्यक्रम में डॉ.जे.के.जेना, उप महानिदेशक (मात्स्यिकी), भा कृ अनु प मुख्य अतिथि रहे। इस दौरान पश्चिम बंगाल पशु एवं मात्स्यिकी विज्ञान विश्वविद्यालय के सहयोग से विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केन्द्र के डॉ.शुभदीप घोष और उनकी टीम द्वारा समुद्री पिंजरा मछली पालन पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। पूर्व मिडनापुर जिले के विविध संघों से कुल 54 मछली पालनकारों और मछुआरों ने प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया।

भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ का दिघा अनुसंधान केन्द्र

दिघा अनुसंधान केन्द्र का उद्घाटन समारोह

भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ को नकद रहित भा कृ अनु प संस्थान पुरस्कार

डॉ. ए. गोपालकृष्णन, निदेशक भा कृ अनु प - सी एम एफ आर आइ ने श्री राधा मोहन सिंह, केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री, से संस्थान में नकद रहित लेनदेन के कार्यान्वयन के लिए 'नकद रहित भा कृ अनु प संस्थान पुरस्कार' प्राप्त किया। पुरस्कार में प्रशस्ति पत्र और 5 लाख रुपए का चैक सम्मिलित थे।

भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ के अंतर्गत कार्यरत कृषि विज्ञान केन्द्र, एरणाकुलम को भी इस श्रेणी का पुरस्कार प्राप्त हुआ, डॉ. श्रीनाथ दीक्षित, निदेशक, कृषि प्रौद्योगिकी प्रयोग अनुसंधान संस्थान (ए टी ए आर आइ) ने केन्द्रीय मंत्री से कृषि विज्ञान केन्द्र, एरणाकुलम के लिए पुरस्कार प्राप्त किया।

डॉ. ए. गोपालकृष्णन, निदेशक श्री राधा मोहन सिंह, केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री से नकद रहित भा कृ अनु प संस्थान पुरस्कार प्राप्त करने का दृश्य

सामाजिक नवाचार पर राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता में श्रेष्ठ 20 विजेताओं में mKRISHI® मात्स्यिकी

mKRISHI® मात्स्यिकी टाटा परामर्श सेवा (टी सी एस) नवोन्मेषी प्रयोगशाला-मुम्बई, भा कृ अनु प-केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान और महासागर सूचना सेवाओं का भारतीय राष्ट्रीय केन्द्र (आइ एन सी ओ आइ एस), हैदराबाद की संयुक्त सहकारिता से विकसित मोबाइल एप्प है। माननीय प्रधान मंत्री ने दिनांक 26 फरवरी, 2017 को अपने भाषण में मछुआरा समुदाय पर सशक्त एवं सकारात्मक प्रभाव की प्रौद्योगिकी के रूप में सराहना की। विदेश मंत्रालय और नीति आयोग द्वारा सामाजिक नवाचार पर आयोजित गौरवपूर्ण राष्ट्रीय प्रतियोगिता 2016 में इस एप्प को कुल 774 आवेदनों में से उत्कृष्ट 20 सामाजिक नवाचारों के बीच सूचीकृत किया गया।

इनको इस शक्य मत्स्यन क्षेत्र (पी एफ इज़ेड) पर सूचना, जो एन ओ ए ए उपग्रह से प्राप्त दूर संवेदन आंकड़े के आधार पर मछली झुंडों के पूर्वानुमान की सूचना है, समुद्री सतह का तापमान और पादपप्लवकों, जो कई मछली प्रजातियों को आहार बनते हैं, की उपस्थिति पर सूचना उत्पन्न करता है और mKRISHI® मात्स्यिकी एप्प इन सूचनाओं को समेकित करके जावा और एन्ड्रोइड मोबाइल फोन के आइकनों के सरल प्रयोग से स्थानीय भाषा में सलाह देता है। मछुआरों ने पी एफ इज़ेड दृश्यमान होने पर ही अपने मत्स्यन ट्रिप की तैयारी करने और मत्स्यन के लिए समुद्र जाने के लिए इस एप्प का उपयोग किया, जिससे अनावश्यक मत्स्यन ट्रिप और इससे जुड़े हुए डीजल, बर्फ और श्रम की लागत कम की जा सकती है। भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ द्वारा 13 मछुआरा समाजों के बीच

आयोजित अध्ययन से यह मालूम पडा कि इस एप्प का उपयोग करने पर डीज़ल की लागत 30% कम की जा सकी जिससे कार्बन फुटप्रिन्ट कम करने की वजह से पर्यावरणीय प्रभाव कम किया जा सका। इसके अतिरिक्त, इस एप्प में कलर कोडेड बैन्ड द्वारा हवा की गति एवं दिशा, तरंग की ऊंचाई दर्शायी जाती है, जिससे मछुआरों को सुरक्षित स्थान पर मत्स्यन करने में सहायता मिलती है। गहरे समुद्र में डाटा सिग्नल न मिलने की समस्या का समाधान करने हेतु टी सी एस और सहभागियों ने समुद्र में 30 कि.मी. की दूरी तक विस्तृत करने के बारे में प्राथमिक अध्ययन किया गया, जिससे मछुआरे समुद्र में मत्स्यन करते वक्त ही मछली पकड़ के मूल्य संबंधी बातचीत करके ताजी मछली पकड़ को बाजार श्रृंखला में सुधार करते हुए बड़ी मांग होने वाले मत्स्यन बंदरगाह तक ले जा सके। डॉ. वी.वी. सिंह, प्रभारी वैज्ञानिक, भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ का मुम्बई अनुसंधान केन्द्र ने दिनांक 9 जनवरी, 2017 को बंगलूरु में आयोजित प्रवासी भारतीय दिवस 2017 कार्यक्रम में पुरस्कार प्राप्त किया।

डॉ. वी.वी. सिंह और mKRISHI® मात्स्यिकी एप्प के अन्य सहयोगी पुरस्कार के साथ

कच्छ जिले में प्राथमिक पिंजरा मछली पालन फार्म का परिचालन

अडानी फाउन्डेशन, मून्द्रा के वित्त पोषण से परिचालित परामर्श परियोजना के अंतर्गत मुन्द्रा के पास जूना बंदर संकरी खाड़ी में एक समुद्री पिंजरा मछली फार्म स्थापित किया गया। गैल्वनाइस्ड अयेर्न से निर्मित 6मी x 6मी के दो पिंजरे दिनांक 17 मार्च, 2017 को स्थापित किए गए और इनमें स्थानीय तौर के अलावा हैचरी से लाए गए महाचिंगट, समुद्रीब्रीम, समुद्रीबास, मल्लेट आदि के किशोरों को संभरित किया गया। जूना बंदर क्रीक में महाचिंगट/पखमछली के पालन की शक्यता का मूल्यांकन करना और गाँव के लोगों में आजीविका के अतिरिक्त उपाय के रूप में पिंजरा मछली पालन की क्षमता का वर्धन करना इसका उद्देश्य था। इस क्षेत्र में टिकाऊ एवं निर्यात उन्मुख महाचिंगट/पखमछली पालन एककों की स्थापना भी इस परियोजना का एक और लक्ष्य है।

(दिवु डी., सुरेश कुमार मोज्जादा, मोहम्मद कोया और कपिल सुखदाने की रिपोर्ट)

पिंजरे की स्थापना का दृश्य

अंडमान एवं निकोबार द्वीपों के प्रगतिशील समुद्री मछुआरों के लिए समुद्री शैवाल पालन प्रौद्योगिकी

एक्स्पोशर एवं अध्ययन दौरे के भाग के रूप में अंडमान एवं निकोबार द्वीपों के 13 प्रगतिशील मछुआरों और मात्स्यिकी निदेशालय के दो फील्ड अधिकारियों ने 21 फरवरी, 2017 को मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र का दौरा किया। इससे पहले भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ द्वारा 2-4 अगस्त, 2016 के दौरान अंडमान एवं निकोबार द्वीपों के मात्स्यिकी निदेशालय के कार्मिकों को भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र में प्रशिक्षण दिया गया था। इस अध्ययन दौरे के दौरान समुद्री मछुआरों ने समुद्री शैवाल पालन के विभिन्न पहलुओं तथा अनुभवों जैसे बाँस से प्लवमान बेड़ा बनाना, रस्सी में बीज सामग्रियों (समुद्री शैवाल टुकड़े) को बांधना, बीज रोपण की गयी रस्सी को बेड़े में बांधना, समुद्र में स्थापित करना आदि के बारे में वैज्ञानिकों के साथ बातचीत की। डॉ. बी. जोण्सन, वैज्ञानिक ने इस गतिविधि का समन्वयन किया।

प्रशिक्षणार्थी बीज रोपण की गयी रस्सी को पकड़ते हुए

हरित शंबु बीजों का बड़े पैमाने पर उत्पादन और मछुआरों को आपूर्ति

स्फुटनशाला में उत्पादित हरित शंबु (*पेर्ना विरिडिस*) के दो मिलियन बीजों और शुक्ति (*क्रासोस्ट्रिया माड्रासेन्सिस*) के 50,000 बीजों को मुत्तलपुषा नदी मुख और अष्टमुडी झील के मछुआरों को प्रदान किया गया। बड़े पैमाने में शंबु बीजों के उत्पादन के लिए नए रूप में सजाया गया कम लागत का पिंजरा अत्यंत उपयोगी देखा गया। शुक्ति के स्पैटों का रोपण किए गए रेन भी पालनार्थ प्रदान किया गया।

(*अनिल एम.के., गोमती पी., रहीम पी.के., राजु बी., पी.एम. कृष्णप्रिया और ओ. शालिनी, विषिंजम अनुसंधान केन्द्र की रिपोर्ट*)

हरित शंबु पालन के लिए नए रूप में सजाया गया पालन पिंजरा

हरित शंबु के बीज

केरल सरकार के मात्स्यिकी विभाग द्वारा प्रायोजित मछली पालन पिंजरों की स्थापना

समुद्री बास मछली के पालन के लिए केरल सरकार की हरित क्रांति निधि द्वारा प्रायोजित पिंजरों (2 मी x 2 मी) की स्थापना दिनांक 31 मार्च, 2017 को गोतुरुत्तु गाँव, कोच्ची में की गयी। स्थानीय युवा ग्रुप ने पिंजरा मछली पालन के इस पहल के लिए प्रयास किया। श्री एस. शर्मा, एम एल ए ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया। डॉ. इमेल्डा जोसफ, प्रधान वैज्ञानिक ने गाँव के पिंजरा मछली पालनकारों के उत्साही ग्रुप को पिंजरा मछली पालन और इसके तकनीकी पहलुओं पर व्याख्यान दिया। कार्यक्रम के पश्चात् खुले पानी में पिंजरों की स्थापना की गयी और समुद्री बैस के संततियों का विमोचन किया गया।

(*समुद्री संवर्धन प्रभाग की रिपोर्ट*)

समुद्री प्रदूषण पर अवगाह जगाने के लिए कला का माध्यम

स्वच्छ भारत अभियान कार्यविधियों के भाग के रूप में तटीय प्रदूषण और समुद्री पारिस्थितिक तंत्र और मानव स्वास्थ्य पर इसके प्रभाव पर लोगों के बीच जागरूकता लाने के उद्देश्य से फोर्ट कोच्ची पुलिन में लगभग 2500 स्क्वायर फीट के क्षेत्रफल में कला स्थापना आयोजित की गयी। कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड के सहयोग से भीमाकार मछली के आकार में स्थापित इस कला सृजन का उद्घाटन 21 जनवरी, 2017 को कोचीन कार्पोरेशन की मेयर सुश्री सौमिनी जैन ने किया।

फोर्ट कोच्ची पुलिन में उद्घाटन समारोह

भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ की 'फिश सिमिट्री' समुद्र में प्लास्टिक अपशिष्टों की अधिकता से मर गयी मछलियों के कठोर प्रभाव की प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति है। प्लास्टिक अपशिष्टों के जमाव से समुद्री आवास तंत्र और मानव स्वास्थ्य पर पड़ने बुरे असर की पृष्ठभूमि में दो महीने का जागरूकता अभियान आयोजित किया गया।

प्लास्टिक मुक्त क्षेत्र के लिए जागरूकता अभियान

भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ के पुरी क्षेत्र केन्द्र द्वारा पुरी वन विभाग, अष्टरंगा ब्लॉक विकास और एक गैर सरकारी संगठन के संयुक्त सहयोग से 24 मार्च, 2017 को प्रमुख पर्यटन स्थान पीर जहानिया में प्लास्टिक प्रदूषण की समस्या के बारे में जागरूकता अभियान आयोजित किया गया और इसके बाद सभी प्रतिभागियों द्वारा सफाई कार्यक्रम भी आयोजित किया गया। अष्टरंगा ब्लॉक के अध्यक्ष, श्री स्वाधिन कुमार बेहरा, रेंच अधिकारी, अष्टरंगा और वन विभाग की टीम, श्री कनु चरण सेथी, चुरियाना पंचायत के उप सरपंच, श्री शुभांकर बेहरा, गैर सरकारी संगठन ग्रीन लाइफ रूरल असोसिएशन और पीर जहानिया मस्जिद के मुल्ला की बैठक आयोजित की गयी। इसी गाँव और पड़ोसी गाँव के विभिन्न स्वयं सहायक ग्रुपों की 100 से अधिक महिलाओं ने बैठक में भाग लिया।

(रीता जयशंकर, प्रभारी वैज्ञानिक, पुरी क्षेत्र केन्द्र की रिपोर्ट)

भारत के मत्स्यन केन्द्रों पर जी आइ एस-आधारित डाटाबेस भारतीय नौ सेना को सौंपा गया

समुद्र में सुरक्षा सुनिश्चित किए जाने के प्रमुख विकास के भाग के रूप में भा कृ अनु प-केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (सी एम एफ आर आइ) ने भारतीय तट के समुद्री मछली अवतरण केन्द्रों के बारे में भौगोलिक सूचना प्रणाली (जी आइ एस) पर आधारित डाटाबेस विकसित किया। तटीय क्षेत्रों की सुरक्षा आसान बनाए जाने के लिए भारतीय नौ सेना को सौंपे दिए गए डाटाबेस में मत्स्यन गतिविधियों के तरीके, मत्स्यन की और हर एक मत्स्यन केन्द्र से मत्स्यन मौसमिकता परिचालन का विस्तार आदि सूचनाएं उपलब्ध हैं। मछली अवतरण केन्द्र के स्थानिक टैग सहित दस्तावेज से आपदा प्रबंधन के कार्यों में मदद दी जा सकेगी। दक्षिण नौ सेना कमान, कोच्ची में आयोजित बैठक में डॉ. ए. गोपालकृष्णन, निदेशक, भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ ने वाइस अड्मिरल ए आर कार्वे ए वी एस एम, फ्लैग अधिकारी मुख्य कमान्डर, दक्षिण मेखला नौ सेना कमान को दस्तावेज सौंपे दिए। डॉ.ए.पी.दिनेशबाबु, प्रधान वैज्ञानिक, भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ मांगलूर अनुसंधान केन्द्र ने भारतीय तट के सभी समुद्रवर्ती राज्यों में फैले गए 1,278 अवतरण केन्द्रों (गुजरात 129, महाराष्ट्र 149, गोवा 34, कर्नाटक 93, केरल 201, तमिल नाडु 359, आंध्रा प्रदेश 204, उड़ीसा 54 और पश्चिम बंगाल 55), जो समुद्री मात्स्यिकी के मानचित्रण के लिए संदर्भ बिंदु और मात्स्यिकी परिरक्षण एवं प्रबंधन के आधारभूत आंकडा हैं, की वस्तुसूची तैयार करने के लिए 22 वैज्ञानिकों और अन्य 85 कर्मचारियों की अनुसंधान टीम का समन्वयन किया।

चित्र: मछली अवतरण केन्द्रों के जी आइ एस पर आधारित डाटाबेस दक्षिण मेखला नौ सेना कमान को सौंपने का दृश्य

(मांगलूर अनुसंधान केन्द्र की रिपोर्ट)

भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ की एन आइ सी आर ए परियोजना के अंतर्गत किए गए वैज्ञानिक कार्यों का थर्ड पार्टी मूल्यांकन 18-19 जनवरी 2017 के दौरान सी एम एफ आर आइ, कोच्ची में किया गया। डॉ. डी. नन्दकुमार, वरिष्ठ सलाहकार, जलवायु परिवर्तन एवं पर्यावरण अंतर सहकारिता सामाजिक विकास, भारत ने संस्थान का दौरा किया और वैज्ञानिकों तथा अनुसंधान अध्येताओं के साथ विचार-विमर्श किया गया। डॉ. पी.यु. ज़क्करिया, परियोजना के प्रधान अन्वेषक और केन्द्रों के समन्यकारों और मुख्यालय के निक्रा वैज्ञानिकों ने बैठक में भाग लिया। डॉ. नन्दकुमार ने एन आइ सी आर ए प्रयोगशालाओं की सुविधाओं, और पोत एफ की *सिल्वर पोम्पानो* तथा क्षेत्र स्तर की कार्यविधियों का निरीक्षण किया।

समुद्री शैवालों से मोटापा कम करने की औषधी का विकास

देश में प्राकृतिक सेवा उद्योग के प्रमुख विकास के रूप में संस्थान ने समुद्री शैवालों से मोटापा और डिसलिपिडेमिया कम करने हेतु प्राकृतिक निवारक औषध विकसित किया। मुख्यालय, कोच्ची में 18 फरवरी 2017 को आयोजित भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ प्लेटिनम जयंती समारोह के उद्घाटन कार्यक्रम के दौरान कडलमीन™ एन्टीहाइपर कोलेस्ट्रोलेमिक एक्स्ट्रैक्ट (कडलमीन™ ACe) नामक उत्पाद का लोकार्पण किया गया।

मोटापा ऐसी एक चिकित्सा स्थिति है, जिसमें शरीर में पड़ गया अधिक वसा इस हद तक संचित हो जाता है कि स्वास्थ्य पर इसका विपरीत असर पड़ जाता है। विश्व स्तर पर देखी जाने वाली यह स्वास्थ्य स्थिति रोकी जा सकती है। पेट (आंत) में होने वाली वर्धित वसा का संचय टाइप -2 मधुमेह, लिपिड मेटाबोलिसम और कोरोनरी आर्टरी रोग से जुडा हुआ है। लगभग 70% मोटे रोगी डिसलिपिडेमिक होते हैं, जिनमें सीरम ट्राइग्लिसराइड (हाइपरट्राइग्लिस रिडेमिया) अधिक, हाइ डेन्सिटी लिपोप्रोटीन कम और कम सांद्रता वाला लिपोप्रोटीन (एल डी एल) कण अधिक देखे जाते हैं। डिसलिपिडेमिया की चिकित्सा के अंतर्गत स्टाटिन चिकित्सा द्वारा लिपिड कम करने वाला उपचार शामिल है, लेकिन इसमें दवा प्रेरित इन्सुलित प्रतिरोध, दीर्घ काल का सूचन, कम प्रतिरक्षा (CoQ10 के रिक्तीकरण द्वारा) जैसे विपरीत प्रभाव होने की संभावना है और लगातार इसका उपयोग करने से कैन्सर हाने की संभावना ज्यादा होती है। सिन्थेटिक दवों के पार्श्व फल से होने वाले जोखिम को देखते हुए भा कृ अनु प-केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिक सुरक्षापूर्वक एवं प्रभावकारी विकल्प के लिए समुद्री शैवालों से प्राकृतिक उपाय ढँढने के लिए प्रेरित हुए हैं।

प्रग्रहण स्थिति में पिंक इयर एम्पेरर मछली के अंडशावक विकास और प्रजनन में महत्वपूर्ण उपलब्धि

विषिंजम अनुसंधान केन्द्र में किसी भी प्रकार के हार्मोन प्रेरणा के बिना पिंक इयर एम्पेरर *लेथ्रिनस लेन्टजान* मछली के अंडों का निषेचन और पहली बार अंडजनन किया जा सका। इस सफल प्रयास के लिए अंडशावकों को तीन महीनों के लिए पुनःचक्रण जलजीव पालन व्यवस्था (आर ए एस) में पालन करना आवश्यक था। एक सप्ताह के बाद दूसरी बार 95% से अधिक अंडों का निषेचन हुआ और इसके बाद नियमित अंडजनन होने लगा। अंडजनन के 16-18 घंटों बाद 27-29^{0}C पानी के तापमान में अंडों का स्फुटन हुआ। नए स्फुटित डिंभकों का आकार 1100-1150μ है, स्फुटन के 30 घंटों के बाद इनके मुँह खुले जाते हैं। मुँह विच्छेद का आकार 110μ है। हरे पानी में रोटिफर, कोपीपॉड नोप्ली, आर्टीमिया नोप्ली और सूक्ष्म आहारों से खिलाकर डिंभकों का पालन किया जाता है। पालन के 35-40 दिनों में स्क्वामेशन के साथ किशोर अवस्था तक पहुँच जाती है। मांस की बेहत्तर गुणवत्ता, बल और पालन के दौरान कचरा मछली और मिश्रित आहार लेने के स्वभाव से बाजार में महंगी होने वाली यह मछली पालन करने की शक्यता से युक्त है।

लेथ्रिनस लेन्टजान का अंडशावक

(*अनिल एम.के., सुगी वी.वी., गोमती पी., रहीम पी.के., संतोष बी., राजु बी., पी.एम. कृष्णप्रिया और ओ. शालिनी की रिपोर्ट*)

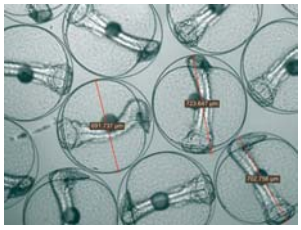

अंड

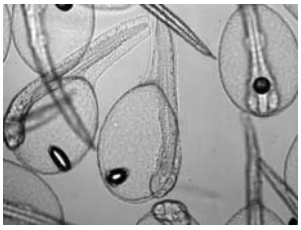

स्फुटित डिंभक

स्फुटन के 11 दिनों के बाद का एल. लेन्टजान डिंभक

एल.लेन्टजान के संतति (स्फुटन के 47 दिनों बाद)

चेन्नई में भीमाकार मान्टा रे का अवतरण

विभिन्न दो अवसरों में दक्षिण चेन्नई के कांचीपुरम जिले के मामल्लपुरम और कोवलम के अवतरण केन्द्रों में दो भीमाकार मान्टा रे *मान्टा बाइरोस्ट्रिस* का अवतरण किया गया। मामल्लपुरम में 13 मार्च, 2017 को गिल जाल में फँसाए गए 400 कि.ग्रा. के भार वाले नर मान्टा रे का अवतरण किया गया। इसके बाद 24 मार्च, 2017 को कोवलम के कृत्रिम चट्टान के पास परिचालित गिल जाल की प्लवमान रस्सी में फँस होने की स्थिति में लगभग 4.2 मी की डिस्क चौड़ाई और 600 कि.ग्रा. के भार वाले और एक नर मान्टा रे का अवतरण किया गया। रीफ मान्टा रे के साथ मान्टा अल्फ्रेदी और सुरा की पांच प्रजातियों और भीमाकार मान्टा रे को वर्ष 2013 में सी आइ टी ई एस की अनुसूची II जो 14 सितंबर, 2014 से लेकर प्रभावित हुई है, में शामिल किया गया है। इस प्रजाति पर भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ के वैज्ञानिकों द्वारा किया गया गैर हानि निष्कर्ष अध्ययन यह सुझाव देता है कि इस क्षेत्र में इस प्रजाति के स्टॉक की स्थिति पर जानकारी की कमी होने की वजह से इसके विदोहन में सावधानी बरतने की आवश्यकता है। उपास्थिमीनों के परिरक्षण पर संस्थान द्वारा जानकारी प्रदान करने के फलस्वरूप मछुआरों ने मान्टा रे को समुद्र में वापस छोड़ने की कोशिश की थी, लेकिन जाल में फँस होने पर सिर में हुई गहरी चोट की वजह से इसका जीवन नहीं बचाया जा सका। इसलिए इसे तट पर लाकर नीलाम कर दिया गया।

(*तलमज्जी मात्स्यिकी प्रभाग की रिपोर्ट*)

पख मछली के डिंभक पालन के लिए आशाजनक नये जीवित खाद्य का विकास

विषिंजम अनुसंधान केन्द्र द्वारा आशाजनक कलनोइड कॉपीपोड *परवोकलानस अरेबिएन्सिस* के स्टॉक और बड़े पैमाने में संवर्धन करने का नयाचार विकसित किया गया। कॉपीपोड की इस पजाति के प्रौढ़ का आकार 500µm है, जिसकी प्राथमिक नॉप्ली का आकार 50µm है, इसलिए यह ग्रूपर और डामसेल मछलियों के सबसे छोटे डिंभकों को खिलाने के लिए उपयोगी है। *नानोक्लोरोप्सिस सलाइना* और *आइसोक्राइसिस गालबाना* के खाद्य मिश्रण, जो स्फुटनशाला में मछली पालन की गुणताओं से युक्त है, देने से *पी.अरेबिएन्सिस* अच्छी तरह बढ़ जाता है। बलयुक्त तथा लवणता और तापमान के विभिन्न स्तरों की सहनशीलता होने वाली यह कॉपीपोड तेज प्रजनन करने वाली प्रजाति है और अन्य कॉपीपोडों की अपेक्षा कम अवधि में उच्चतर सांद्रता में बढ़ जाती है। सामान्यतः यह प्रजाति पानी में समान रूप से फैली जाती है, अतः पालन टैंक की कमजोर मछली के लिए भी यह उपलब्ध होती है।

परवोकलानस अरेबिएन्सिस की नॉप्ली अवस्था

(बी. संतोष, एफ. मोहम्मद अनज़ीर, के.एस. अनीष, सी. उण्णिकृष्णन और एम.के. अनिल की रिपोर्ट)

पुदुच्चेरी के अपतटीय मध्यप्रकाशी प्रवाल आवास तंत्र की नितलस्थ जैवविविधता का मापन

भारत के पूर्व तट पर स्थित पुदुच्चेरी के अपतटीय मध्यप्रकाशी (मीसोफोटिक) प्रवाल आवास तंत्र के नितलस्थ भाग की जैवविविधता पर जानकारी प्राप्त करने के उद्देश्य से जलांदर निमज्जन (स्कूबा डाइविंग) द्वारा सर्वेक्षण आयोजित किया गया। प्रवाल भित्ति की लंबाई 2.5 कि.मी., चौडाई 0.05 कि.मी. और क्षेत्र 12.5 हेक्टयर था। भित्ति की मोटाई ~7 मी. थी। मध्यप्रकाशी आवास तंत्र में प्रवाल, गोरगोनिड्स, मछली और अन्य अकशेरुकी जीव खूब बढ़ते हैं, जिससे इस अनोखे आवास तंत्र के परिरक्षण का संकेत मिलता है। पुदुच्चेरी में फरवरी - मार्च 2017 के दौरान स्कूबा डाइविंग आयोजित किया गया और 10 स्टेशनों से 37 मी. की गहराई से नमूनों का संग्रहण किया गया। इस पारितंत्र की ठोस प्रवालों, काले प्रवालों, मछलियों और अन्य नितलस्थ अकशेरुकियों की रोचक विविधता पर जानकारी प्राप्त की गयी।

(पी. लक्ष्मीलता, एस. जास्मिन, मिरियम पॉल और वी. पेरियसामी, समुद्री जैवविविधता प्रभाग)

शंबु स्पैटों में स्ट्रेस के निर्धारण हेतु परीक्षण

शंबु स्पैटों की गुणता (स्वस्थ या अस्वस्थ) का परीक्षण करने के उद्देश्य से मोलस्कन मात्स्यिकी प्रभाग की प्रयोगशाला में 28-29 मार्च, 2017 को शंबु स्पैट स्ट्रेस परीक्षण (एम एस एस टी) की रूपकल्पना और परीक्षण आयोजित किया गया। इस 24 घंटों के परीक्षण के लिए एडवनक्काड के शंबु संस्तरों से शंबु स्पैटों का संग्रहण करके प्रयोगशाला तक लाया गया।

(मोलस्कन मात्स्यिकी प्रभाग की रिपोर्ट)

एम एस एस टी परीक्षण का दृश्य

अष्टमुडी झील में सीपी जैवभार का सर्वेक्षण

मात्स्यिकी में नए प्रभव का निर्धारण करने के लिए अष्टमुडी झील के पांच क्षेत्रों में 27 फरवरी से 1 मार्च, 2017 के दौरान जैवभार सर्वेक्षण किया गया। सीपी संस्तरों में कम स्टॉक का कारण या तो गैर-समकालिक अंडजनन या जल्दी अंडजनन है।

नारंगी चित्तियों वाली ग्रूपर के अंगुलिमीनों का नर्सरी पालन

विशाखपट्टणम जिले के पायकराव पेट्टा मंडल के पेन्टाकोट्टा गाँव में स्थित खारा पानी चिंगट फार्म के स्फुटनशाला और मिट्टी के तालाब में स्फुटनशाला में उत्पादित नारंगी चित्तियों वाली ग्रूपर मछली (*एपिनिफेलस कोइयोडस*) की संततियों का पालन परीक्षण किया गया। कंकरीट के टैंकों में 0.5 मि.मी. की जालाक्षि वाले हाप्पाओं में प्रति मी^{3} के लिए 65 की संभरण सांद्रता में नए अंगुलिमीनों का संभरण किया गया। परीक्षण के दौरान दो महीनों के लिए विभिन्न प्रकार के खाद्य जैसे मछली और चिंगट मांस का कीमा, प्रोटीन के विभिन्न स्तरों (45 और 50% सी पी) के कृत्रिम आहार और इनका मिश्रित खाद्य दिया गया। नर्सरी स्तर के दो महीनों के पालन के बाद अंगुलिमीनों को 1:1 अनुपात में मछली कीमा और कृत्रिम खाद्य दिए जाने पर उच्चतर बढ़ती दर पायी गयी। मिट्टी के तालाब में 10 हाप्पाओं (1x1x1.5 मी.) में, प्रति हाप्पा में 150, 200, 300 और 400 अंगुलिमीनों की संभरण सघनता में 3000 अंगुलिमीनों का संभरण किया गया। अंगुलिमीनों को खाने के लिए कृत्रिम खाद्य दिया जाता है और इनका पालन प्रगति पर है (45% सी पी)।

(शेखर मेघराजन, रितेश रंजन, बिजी सेवियर, बी. वंशी, नरसिंहलु साधु और शुभदीप घोष की रिपोर्ट)

ए आइ एन पी समुद्री संवर्धन के अंदर प्रशिक्षण

विषिंजम अनुसंधान केन्द्र द्वारा 9 से 13 जनवरी, 2017 के दौरान समुद्री संवर्धन में हाल के विकास विषय पर पांच दिवसीय प्रशिक्षण आयोजित किया गया। पिंजरा मछली पालन कार्यों में लगे हुए कुछ वैज्ञानिकों के अतिरिक्त केरल सरकार के मात्स्यिकी विभाग से प्रतिनियुक्त किए गए मात्स्यिकी अधिकारियों और चुने गए प्रगतिशील किसानों ने प्रशिक्षण में भाग लिया। डॉ. जी. गोपकुमार, एमरिटस वैज्ञानिक एवं भूतपूर्व अध्यक्ष, समुद्री संवर्धन प्रभाग, डॉ. एम.के. अनिल, प्रभारी वैज्ञानिक और डॉ. इमेल्डा जोसफ, अध्यक्ष, समुद्री संवर्धन प्रभाग ने व्याख्यान दिए। डॉ. बी. संतोष ने कार्यक्रम का समन्वयन किया।

विषिंजम अनुसंधान केन्द्र में प्रशिक्षणार्थी और आयोजक

वेरावल क्षेत्रीय केन्द्र द्वारा 06 से 11 फरवरी, 2017 और 06 से 11 मार्च, 2017 के दौरान गुजरात के विभिन्न तटीय जिलों के 40 मछुआरों / उद्यमियों, जिन्हें गुजरात सरकार के मात्स्यिकी विभाग द्वारा नामांकित किया गया है, के लिए "खुला सागर पिंजरा मछली पालन" विषय पर ए आइ एन पी-समुद्री संवर्धन द्वारा प्रायोजित दो प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए।

(डी. डिवु, महेन्द्र डी. फोफान्डी और सुरेश कुमार मोज्जादा की रिपोर्ट)

वेरावल में खुला सागर पिंजरा मछली पालन पर ए आइ एन पी प्रशिक्षण के प्रशिक्षणार्थी और आयोजक

विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केन्द्र में समुद्री संवर्धन पर अखिल भारतीय समुद्री संवर्धन नेटवर्क परियोजना (ए आइ एन पी-एम) के अंदर 30 जनवरी से 4 फरवरी, 2017 के दौरान 'जीवित खाद्य पालन' विषय पर आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम में आंध्र प्रदेश और कर्नाटक से कुल बीस प्रतिभागियों ने भाग लिया। डॉ. रितेश रंजन, वैज्ञानिक, डॉ. बिजी सेवियर, डॉ. शेखर मेघराजन, डॉ. शुभदीप घोष और डॉ. बिश्वजीत दास ने प्रशिक्षण कार्यक्रम का समन्वयन किया। इस दौरान रोटिफरों और कॉपीपोडों जैसे जीवित खाद्यों के पालन और समुद्री पख मछलियों के डिंभकों के पालन पर व्यावहारिक प्रशिक्षण आयोजित किया गया।

'जलवायु स्मार्ट' मछुआरा समुदाय हेतु मछुआरों के लिए आपसी विनिमय कार्यशाला

जलवायु परिवर्तन के प्रभावों के अनुकूलन और शमन पर कार्यनीति तैयार करने के उद्देश्य से कांचीपुरम जिले के चुने गए मत्स्यन गाँवों के मछुआरों के साथ विचार-विमर्श करने के लिए 16 मार्च, 2017 को एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गयी। कार्यशाला में कोवलम, कडलूरचिन्नकुप्पम, इंजम्बक्कम, चेम्मेन्चेरी, पालयनाडुकुप्पम, कनत्तूर रेड्डिकुप्पम, ओय्यालिकुप्पम, मामल्लमुरम और सुलेरिकाट्टुकुप्पम के कुल 73 मछुआरों ने भाग लिया। कोवलम गाँव, जहाँ मत्स्यन समुदाय के लोग खुला सागर मछली पालन, मात्स्यिकी संपदाओं और कृत्रिम झाडियों द्वारा आवास पुनःस्थापना का भागीदारी प्रबंधन कार्यक्रम, सर्फिंग और डाइविंग जैसे समुद्री स्पोर्ट्स द्वारा इको-टूरिसम का प्रोत्साहन और समुद्री पुलिन की सफाई के टूरिज्म कार्यक्रमों में लगे हुए हैं, को 'जलवायु स्मार्ट' गाँव के रूप में घोषित किया गया है और इस तरह के विकास कार्यों के लिए उत्तरदायी छह मछुआरा स्वयं सहायता समूहों को सम्मानित किया गया।

कोवलम के मछुआरा स्वयं सहायता समूह को सम्मानित करते हुए

(शोभा जो. किषकूडन और आर. गीता, मद्रास अनुसंधान केन्द्र की रिपोर्ट)

पिंजरा मछली पालन पर क्षमता वर्धन कार्यक्रम

समुद्री संवर्धन प्रभाग द्वारा पिंजरे में केरल के लिए 16-17 मार्च, 2017 के दौरान कोच्ची में अनुयोज्य वाणिज्यिक प्रमुख मछलियों पालन विषय पर क्षमता वर्धन कार्यक्रम आयोजित किया गया। देशव्यापी परिचालन की जाने वाली अखिल भारतीय समुद्री संवर्धन नेटवर्क परियोजना (ए आइ एन पी-एम) के अंतर्गत कम लागत के मछली पालन के नमूनों में अभिरुचि रखने व्यक्तियों को दिए जाने वाले प्रशिक्षण के भाग के रूप में यह कार्यक्रम आयोजित किया गया। सात जिलों से चुने गए पचास लोगों ने प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया। डॉ. इमेल्डा जोसफ, डॉ. बोबी इग्नेशियस, डॉ. षोजी जोसफ और डॉ. के. मधु, प्रधान वैज्ञानिक गण, समुद्री संवर्धन प्रभाग और श्री के.एम. वेणुगोपालन, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी ने पिंजरा मछली पालन के विभिन्न पहलुओं पर व्याख्यान दिए। प्रशिक्षणार्थियों के लिए पिषला के पिंजरा मछली पालन स्थान तक दौरा भी आयोजित किया गया।

(डॉ. इमेल्डा जोसफ की रिपोर्ट)

"गुजरात के कच्छ जिले में भद्रेश्वर के अपतटीय क्षेत्रों के कृत्रिम मछली आवास व्यवस्था पर आधारित समुद्री आवास तंत्रों की पुनःस्थापना" विषयक परामर्श परियोजना के हितधारकों के साथ तालमेल बनाने और परियोजना के अंतर्गत कार्रवाइयों के कार्यान्वयन पर कार्यनीतिपरक योजना बनाने के लिए 18 जनवरी, 2017 को भद्रेश्वर (कच्छ जिला) के ग्राम पंचायत मकान में कार्यशाला आयोजित की गयी।

(वेरावल क्षेत्रीय केन्द्र की रिपोर्ट)

तूत्तुकुडी में मछुआरा हितधारकों की बैठक

भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ टूटिकोरिन अनुसंधान केन्द्र द्वारा 17 मार्च, 2017 को आयोजित मछुआरा हितधारकों की बैठक में तूत्तुकुडी और कन्याकुमारी जिलों के मत्स्यन गाँवों के मोटरीकृत एवं यंत्रीकृत सेक्टरों के 25 मछुआरों ने भाग लिया। तूत्तुकुडी के विभिन्न संगठनों के कार्मिकों, डॉ. सी.एस. षाइन कुमार, उप निदेशक, एम पी ई डी ए क्षेत्रीय कार्यालय, डॉ. विनोद एस. रवीन्द्रन, राज्य समन्वयक नेटफिश, श्रीमती उमा कालिसेल्वी सम्मिलित हैं, और श्री वेलमुरुगन, मात्स्यिकी अधीक्षक, राज्य मात्स्यिकी विभाग ने भी भाग लिया।

मा सं वि कार्यक्रमों का आयोजन

कारवार अनुसंधान केन्द्र द्वारा समुद्री प्राणिविज्ञान विभाग के छात्रों के लिए पिंजरा मछली पालन तकनीक और जीवाणु तकनीक पर एक सप्ताह की कार्यशाला आयोजित की गयी।

डॉ. गीता शशिकुमार ने केरल राज्य मात्स्यिकी विभाग के कनिष्ठ स्तरीय एक्सिक्यूटीव कर्मचारियों के लिए ईस्ट कडुंगल्लूर, आलुवा में 27 फरवरी, 2017 को 'शुक्ति, शंबु और सीपी पालन' विषय पर प्रशिक्षण दिया।

तमिल नाडु के मात्स्यिकी विभाग के राष्ट्रीय कृषि विकास कार्यक्रम (एन ए डी पी) के अंतर्गत 10 जी आइ पिंजरों (6 मी. व्यास) के निर्माण के लिए तकनीकी मार्गदर्शन दिया गया। कीलवायपार तटीय गाँव में संयुक्त निदेशक (क्षेत्रीय), तूत्तुकुडी जिला के पर्यवेक्षण में 12 मार्च, 2017 को तकनीकी मूल्यांकन किया गया।

(सी. कालिदास, एल. रंजित, पी.पी. मनोजकुमार, आइ. जगदीश और एम. कविता, टूटिकोरिन अनुसंधान केन्द्र की रिपोर्ट)

मात्स्यिकी पर्यावरण प्रबंधन प्रभाग द्वारा कोच्ची में 5 से 11 जनवरी, 2017 के दौरान "सांख्यिकीय सोफ्टवेयर के उपयोग से पारितंत्रिक विश्लेषण के तरीके" विषय पर प्रशिक्षण एवं कार्यशाला आयोजित की गयी। इस दौरान पी ए एस टी, एस पी एस एस, पी आर आइ एम ई आर और क्यू जी आइ एस जैसे सोफ्टवेयरों के उपयोग और प्रभाग द्वारा समुद्री पारितंत्र की विभिन्न परियोजनाओं के अंतर्गत उत्पन्न आंकड़ों की सूचनाओं के सार के लिए विभिन्न सांख्यिकीय औजारों के उपयोग पर करीब 40 प्रतिभागियों को व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया गया। अण्णामलै विश्वविद्यालय, भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, भा कृ अनु प-सी आइ एफ टी, एन आइ ओ और के वी ए एस यु के विशेषज्ञों ने विभिन्न सत्रों का संचालन किया।

(डी. प्रेमा, संयोजक की रिपोर्ट)

मात्स्यिकी विज्ञान के क्षेत्र में वर्ष 1954 से लेकर प्रमुख इंडियन जर्नल

ISSN 0970-6011

वार्षिक चंदा रु:
₹ 1000 $100
निदेशक, सी एम एफ आर आइ
कोच्ची - 682 018 से संपर्क करें
इन्टरनेशनल इंपैक्ट फैक्टर 0.195
एन ए ए एस रेटिंग 6.2

उड़ीषा में तिमि का धंसन

मागलाघाट नदी मुख में 16 फरवरी, 2017 को एक बलीन तिमि का धंसन हुआ और 3 अप्रैल, 2017 को पुरी में 38 फीट की लंबाई के एक स्पेर्म तिमि का धंसन हुआ। दोनों तिमि सड़ गए थे और वन विभाग द्वारा रेत में इनका दफन किया गया। आण्विक औजारों द्वारा पुष्टि की जाने हेतु ऊतक के नमूने संग्रहित किए गए।

ए टी आइ सी द्वारा प्रौद्योगिकी सलाहकार सेवाएं

संस्थान में दौरा किए गए केरल, कर्नाटक, गोवा, ओड़ीषा और महाराष्ट्र के राज्य मात्स्यिकी विभाग के कार्मिकों और मछुआरों को विचार विमर्श सत्रों, प्रदर्शनियों, वीडियो प्रदर्शनियों, विभिन्न प्रयोगशालाओं, जैवविविधता संग्रहालय तथा संस्थान के प्रकाशनों द्वारा प्रौद्योगिकी सूचनाएं प्रदान की गयीं। ए टी आइ सी द्वारा उत्पादों के विपणन और सेवाओं से अप्रैल 2016 से मार्च 2017 के दौरान 3,45,165/- रुपए के राजस्व का उत्पादन किया गया। वर्ष 2016-2017 के दौरान संस्थान में दौरा किए गए 15,393 लोगों को प्रौद्योगिकी सलाहकार सेवा प्रदान की गयी और प्रवेश शुल्क के रूप में 1,78,150/- रुपए का संग्रहण किया गया।

तिमाही के दौरान 23 फरवरी, 2017 को कोट्टयम जिले के पूक्कैता के महिला स्वयं सहायक ग्रुप के लिए एस एच जी बैठक और 8 मार्च, 2017 को चेराइ पंचायत के अक्वापोनिक्स मछुआरों के लिए विचार विमर्श बैठक का आयोजन किया गया।

छत्तीसगढ़ के छात्र और भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ के संकाय सदस्य

ए टी आइ सी, भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ ने कामधेनु विश्वविद्यालय, छत्तीसगढ़ के मात्स्यिकी कॉलेज के बी एफ.एससी अंतिम वर्ष के छात्रों के लिए 20-25 फरवरी, 2017 के दौरान "भारत में समुद्री मात्स्यिकी और समुद्री संवर्धन अनुसंधान" विषय पर 6 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयान किया।

(डॉ. एन. अश्वती, प्रबंधक,
ए टी आइ सी एवं एस ई ई टी टी प्रभाग की रिपोर्ट)

मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र में राजस्व उत्पादन

जनवरी-मार्च, 2017 अवधि के दौरान अलंकारी मछली, सिल्वर पोम्पानो और कोबिया मछली के अंगुलिमीनों के विपणन द्वारा 2,11,000/- रुपए के राजस्व का संग्रहण किया गया।

(ए.के. अब्दुल नाज़र, आर. जयकुमार,
जी. तमिलमणी, एम. शक्तिवेल, पी. रमेशकुमार,
जोण्सन बी., अमीर कुमार समल,
के.के. अनिकुट्टन और एम. शंकर,
मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र की रिपोर्ट)

सिल्वर पोम्पानो के अंगुलिमीनों का पैकट केरल में जलजीव पालन विकास की एजेन्सी (ए डी ए के) को प्रदान करने का दृश्य

नए प्रकाशन

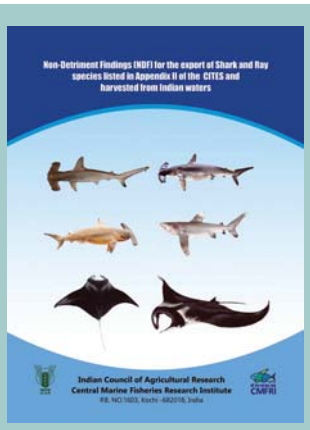

समुद्री मात्स्यिकी नीति श्रेणी - 6

पी.यु. ज़क्करिया, शोभा जो किषकूडन, सुजिता तोमस, पी.पी. मनोजकुमार, रेखा जे. नायर, टी.एम. नजमुदीन, जी.बी. पुरुषोत्तमा, एम. मुक्ता, स्वातिप्रियंका सेन दास, के.वी. अखिलेश और एल. रम्या 2017। सी आइ टी ई एस की अनुसूची II में सूचीकृत और भारतीय समुद्रों से संग्रहित सुरा और रे प्रजातियों के निर्यात के लिए गैर हानि खोज।

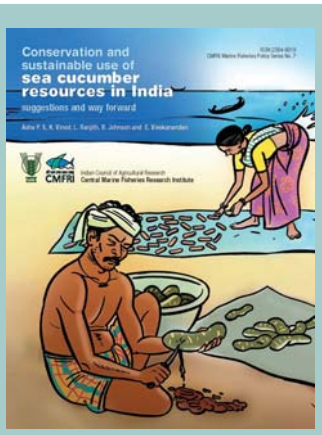

समुद्री मात्स्यिकी नीति श्रेणी - 7

पी.एस. आशा, के. विनोद, एल. रंजित, बी. जोण्सन और ई. विवेकानन्दन 2017। भारत में समुद्री ककड़ी संपदाओं के परिरक्षण और टिकाऊ उपयोग आगे के सुझाव तथा मार्ग।

केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, कोच्ची को वर्ष 2015-16 के दौरान राजभाषा के उत्कृष्ट निष्पादन के लिए कोच्ची नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की राजभाषा रोलिंग ट्रोफी (द्वितीय स्थान) प्रदान की गयी। सी आइ एफ एन ई टी में दिनांक 18 जनवरी, 2017 को आयोजित कार्यक्रम में श्री सी. मुरलीधरन, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी और श्री नवीन कुमार यादव, सहायक निदेशक (रा भा) ने डॉ. राधिकादेवी, प्रधानाचार्य, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, कोच्ची से पुरस्कार ग्रहण किया। श्री नरेन्द्र सिंह मेहरा, सहायक निदेशक (कार्यान्वयन), कार्यान्वयन कार्यालय, राजभाषा विभाग और श्री के.के. रामचन्द्रन, उप निदेशक (रा भा), आयकर कार्यालय, कोच्ची भी उपस्थित थे।

भा कृ अनु प-सी एम एक आर आइ टीम राजभाषा ट्रोफी प्राप्त करते हुए

भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ वेरावल क्षेत्रीय केन्द्र में 3 मार्च, 2017 को श्री प्रभास कुमार झा, आइ ए एस, सचिव, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, नई दिल्ली की अध्यक्षता में वेरावल नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की विशेष बैठक आयोजित की गयी। वेरावल के न रा का स के अधिकारी गण और विभिन्न कार्यालयों के सदस्य गण भी बैठक में उपस्थित थे।

अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए एक दिवसीय हिन्दी कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। मुख्यालय में 8 फरवरी, 2017 को "बोलचाल की हिन्दी" पर आयोजित कार्यशाला में 22 अधिकारियों और कर्मचारियों ने भाग लिया। इसी तरह मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र में 29 मार्च, 2017, मद्रास अनुसंधान केन्द्र में 30 मार्च, 2017, टूटिकोरिन अनुसंधान केन्द्र में 25 जनवरी, 2017, मुम्बई अनुसंधान केन्द्र में 8 मार्च, 2017, और कारवार अनुसंधान केन्द्र में 30 मार्च, 2017 को हिन्दी कार्यशालाओं का आयोजन किया गया।

वेरावल क्षेत्रीय केन्द्र में आयोजित विशेष न रा का स बैठक

संस्थान की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक 31 जनवरी, 2017 को डॉ. ए. गोपालकृष्णन, निदेशक की अध्यक्षता में आयोजित की गयी। इस दौरान अक्तूबर-दिसंबर, 2016 अवधि की राजभाषा गतिविधियों का पुनरीक्षण किया गया और प्रगति के लिए सुझावों पर चर्चा की गयी।

राजभाषा निरीक्षण

श्री मनोज कुमार, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी (रा भा), भा कृ अनु प, नई दिल्ली ने 11 जनवरी, 2017 को मुम्बई अनुसंधान केन्द्र की राजभाषा गतिविधियों का निरीक्षण किया। श्री नवीन कुमार यादव, सहायक निदेशक (रा भा), भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ ने दिनांक 22 और 24 मार्च, 2017 को क्रमशः मद्रास अनुसंधान केन्द्र और विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केन्द्र में राजभाषा का निरीक्षण किया। डॉ.इमेल्डा जोसफ, प्रधान वैज्ञानिक ने 9 जनवरी, 2017 को विषिंजम अनुसंधान केन्द्र में राजभाषा कार्यान्वयन का निरीक्षण किया।

जर्नल क्लब

मुख्यालय में डॉ. श्यान एस. सलिम, जर्नल क्लब के संयोजक द्वारा प्रोफसर डॉ. मार्टन बेविन्क, भूविज्ञान, योजना और अंतर्राष्ट्रीय विकास अध्ययन विभाग (जी पी आइ ओ), आमस्टरडाम विश्वविद्यालय ने "उष्णकटिबंधीय समुद्री मात्स्यिकी गवेर्नन्स-आगे के मार्ग" विषय पर 18 फरवरी, 2017 को व्याख्यान दिया, श्री जेम्स डेविस, लीड (अपतटीय प्रचालन तंत्र और परिचालन) और श्री रिचार्ड मैकमुल्लन, लीड (कार्यक्रम वितरण और अनुपालन), अंतर्राष्ट्रीय परामर्श ग्रुप "एको फिश कन्सल्टन्ट", युनाइटड किंग्डम द्वारा 20 मार्च, 2017 को आपसी विनिमय सत्र आयोजित किया गया। डॉ. टी.वी. सत्यानन्दन, अध्यक्ष, मात्स्यिकी संपदा निर्धारण प्रभाग द्वारा 23 फरवरी, 2017 को "केरल में रोड दुर्घटनाओं की प्रवणता पर साख्यिकीय खोज" विषय पर और डॉ. पी. विजयगोपाल, अध्यक्ष, समुद्री जैप्रौद्योगिकी प्रभाग द्वारा 17 मार्च, 2017 को "पशु उत्पादन व्यवस्थाओं दक्षता" विषय पर व्याख्यान दिए गए।

मद्रास अनुसंधान केन्द्र की जर्नल क्लब द्वारा टेम्पिल अड्वेन्चेर्स ऑन स्कूबा डाइविंग एंड नीड फॉर कनसर्वेशन ऑफ ओशियन विषय पर 7 जनवरी, 2017 को श्री एस.बी. अरविन्द का व्याख्यान आयोजित किया गया। टूटिकोरिन अनुसंधान केन्द्र की जर्नल क्लब द्वारा 24 जनवरी, 2017 को "परमाणु ऊर्जा: संभावनाएं और चुनौतियाँ" विषय पर श्री ए.वी. सतीश, वैज्ञानिक अधिकारी, कूडनकुलम परमाणु ऊर्जा परियोजना का व्याख्यान दिया गया। मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र में डॉ. अमीर कुमार समल सचिव के रूप में जर्नल क्लब का गठन किया गया और केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा कई व्याख्यान आयोजित किए गए।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन

भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, कोच्ची के महिला सेल द्वारा अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया गया और इस दौरान एड्वोकेट सुजाता वर्मा, अध्यक्ष, मातृभूमि गृहलक्ष्मीवेदी ने "समानता के लिए बोल्ड बनो" विषय पर व्याख्यान दिया। डॉ. ए. गोपालकृष्णन ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। इस अवसर पर डॉ. सोमी कुरियाकोस, अध्यक्ष, महिला सेल और डॉ. एन. अश्वती, सचिव ने भी भाषण दिए।

मुख्यालय में दर्शक गण

मद्रास अनुसंधान केन्द्र में 'परिवर्तन के लिए बहादुर बनो' थीम पर आयोजित अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस समारोह में तमिल के दो विख्यात साहित्यकार- श्रीमती कन्दलक्ष्मी चन्द्रमौली और प्रोफसर (सेवानिवृत्त) सी.वी. गीता को विशेष अतिथियों के रूप में आमंत्रित किया गया और महिलाओं के विशेषकर तमिल नाडु में प्रमुख परिवर्तनों, के उदाहरणों पर चर्चा की गयी।

कारवार अनुसंधान केन्द्र में महिला कर्मचारियों के लिए प्रतियोगिताएं आयोजित की गयीं और बालिकाओं के अनाथालय का दौरा किया तथा स्टेशनरी वस्तुओं और खाद्य पदार्थों का वितरण किया गया।

कारवार अनुसंधान केन्द्र में महिला दिवस समारोह

मांगलूर अनुसंधान केन्द्र में कर्मचारियों और उनके परिवारों के लिए नृत्य, ललित गान और खेलकूद कार्यक्रमों के साथ 26 जनवरी, 2017 को क्लब दिवस मनाया गया।

मांगलूर अनुसंधान केन्द्र में क्लब दिवस समारोह के दौरान कर्मचारियों और परिवार के सदस्यों का दृश्य

तटीय सफाई दिवस

वेरावल क्षेत्रीय केन्द्र के वैज्ञानिकों और कर्मचारियों ने भारतीय तट रक्षक द्वारा 4 फरवरी, 2017 को वेरावल के बन गंगा बीच में आयोजित विशेष 'तटीय सफाई दिवस' में भाग लिया।

तटीय सफाई दिवस के सहभागी गण

भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ ने 3 से 5 मार्च, 2017 के दौरान भा कृ अनु प-सी आइ एफ ई, मुम्बई (समतुल्य विश्वविद्यालय) के XIIIवां दीक्षांत समारोह के दौरान आयोजित स्टुडेन्ट्स कनवेन्शन एवं प्रदर्शनी में भाग लिया। डॉ. त्रिलोचन महापात्र, सचिव, कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग (डेयर) तथा महा निदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (भा कृ अनु प) कार्यक्रम में मुख्य अतिथि रहे। श्री महादेव जगन्नाथ जंकर, पशुपालन, डेमरी विकास एवं मात्स्यिकी विकास मंत्री, महाराष्ट्र सरकार, मुम्बई, श्री गजानन कीर्तिकर, सांसद, डॉ. जे.के. जेना, उप महा निदेशक (मात्स्यिकी), भा कृ अनु प और डॉ. भारती लावकर, एम एल ए, मुम्बई, सभा इस अवसर पर सम्माननीय अतिथि रहे। प्रदर्शनी में लगभग 40 संस्थाओं ने भाग लिया, जिनमें 19 मात्स्यिकी कॉलेज, भा कृ अनु प संस्थानों जैसे भा कृ अनु प-सी आइ एफ ई, भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, भा कृ अनु प-सी आइ आर सी ओ टी, भा कृ अनु प-सी आइ एफ टी, भा कृ अनु प-सी आइ एफ ए, भा कृ अनु प-सी आइ एफ आर आइ, भा कृ अनु प-एन बी एफ जी आर, भा कृ अनु प-डी सी एफ आर, निजी कंपनियाँ और सी एस आइ आर-एन आइ ओ आदि सम्मिलित थे। संस्थान के प्रदर्शनी कार्यक्रमों में केन्द्र के सभी कर्मचारी सदस्यों ने सहयोग दिया।

प्रदर्शनी स्टॉल में डॉ. त्रिलोचन महापात्र, महा निदेशक, भा कृ अनु प और डॉ. जे.के. जेना, उप महा निदेशक (मात्स्यिकी), भा कृ अनु प

मत्स्य मेला में भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ द्वारा प्रदर्शित नमूनों के दर्शक

मांगलूर अनुसंधान केन्द्र ने उडुपी जिले के माल्पे पुलिन में 3-5 मार्च, 2017 के दौरान आयोजित 'मत्स्य मेला 2017' में भाग लिया। अनुसंधान केन्द्र के वैज्ञानिकों एवं कर्मचारियों ने कर्नाटक की समुद्री मात्स्यिकी के विकास को दर्शाते हुए 30 मी. की लंबाई में नमूनों का ढांचा बनाया। संस्थान के मार्गदर्शन से विकसित प्रौद्योगिकियों के नमूनों और नोन-बायोडीग्रेडबिल प्लास्टिक वस्तुओं के वर्धित उपयोग के प्रभावों को दर्शाने वाले नमूनों का प्रदर्शन किया गया, जो प्रदर्शनी का दौरा किए जाने वाले लोगों को अधिक रूप से आकर्षित किया गया। श्री प्रमोद माधवराज, माननीय मात्स्यिकी युवक सेवा और खेलकूद मंत्री, कर्नाटक सरकार ने मत्स्य मेला 2017 का उद्घाटन किया।

गांधी नगर में 9-13 जनवरी, 2017 के दौरान आयोजित वाइब्रेन्ट गुजरात ग्लोबल ट्रेड शो में वेरावल क्षेत्रीय केन्द्र ने भाग लिया। भा कृ अनु प पावलियन में सजाए गए भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ स्टॉल में संस्थान की प्रमुख अनुसंधान उपलब्धियों, विशेषतः गुजरात में किए गए कार्यकलापों का प्रदर्शन किया गया। माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 9 जनवरी, 2017 को ट्रेड शो का उद्घाटन किया। श्री मोहम्मद कोया के., प्रभारी वैज्ञानिक और डॉ. सुरेश कुमार मोज्जादा, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी ने ट्रेड शो में भाग लिया।

वाइब्रन्ट गुजरात ग्लोबल ट्रेड शो 2017 में भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ की सहभागिता

कृषि प्रौद्योगिकी सूचना केन्द्र (ए टी आइ सी), भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ ने निम्नलिखित प्रदर्शनियों में भाग लिया और स्टॉल की गतिविधियों में सहयोग दिया।

- सेन्ट आल्बर्ट्स कॉलेज, एरणाकुलम में 24-28 जनवरी, 2017 के दौरान 'आल्बर्टियन अंतर्राष्ट्रीय शैक्षिक प्रदर्शनी 2017'
- मार्तोमा कॉलेज, तिरुवल्ला में 25-31 जनवरी, 2017 के दौरान आयोजित 29वीं केरल विज्ञान कांग्रेस के दौरान आयोजित 'राष्ट्रीय विज्ञान प्रदर्शनी'
- आइ ए आर आइ, नई दिल्ली में 15-17 मार्च, 2017 के दौरान आयोजित 'कृषि उन्नति मेला' प्रदर्शनी
- जैव कृषि एवं ग्रामीण विकास फाउन्डेशन द्वारा 24-27 मार्च, 2017 के दौरान आयोजित 'फुड एंड अग्री-अक्वा एक्स्पो 2017'
- भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ के प्लेटिनम जयंती समारोह के दौरान कोच्ची में 18 फरवरी, 2017 को आयोजित प्रदर्शनी।

(एन. अश्वती, ए टी आइ सी प्रबन्धक की रिपोर्ट)

कृषि उन्नति मेला

आगंतुक

श्री सुदर्शन भगत का विषिंजम अनुसंधान केन्द्र में दौरा

कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री श्री सुदर्शन भगत ने 28 जनवरी, 2017 को भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ विषिंजम अनुसंधान केन्द्र का दौरा किया। उन्होंने केन्द्र में नए निर्मित पुनःचक्रण जलजीव पालन व्यवस्था (आर ए एस) का उद्घाटन किया और केन्द्र के कर्मचारियों का संबोधन किया।

डॉ. टी.एम. तोमस आइसक, वित्त मंत्री, केरल सरकार ने मुख्यालय का दौरा किया और निदेशक एवं प्रभागों के अध्यक्षों के साथ चर्चा की। बैठक के दौरान उन्होंने कहा कि राज्य सरकार मछली पालन सुधार नीति के कार्यान्वयन के लिए वैज्ञानिक आदानों पर विचार करने के लिए तैयार है।

विषिंजम अनुसंधान केन्द्र में श्री पी. सुदर्शन भगत

डॉ. तोमस आइसक और वरिष्ठ अधिकारियों की चर्चा

डा. एस. सुल्तान, वरिष्ठ परामर्शक, डी ए डी एफ, कृषि भवन, नई दिल्ली ने 20 फरवरी, 2017 को मांगलूर अनुसंधान केन्द्र का दौरा किया।

डॉ. विद्या प्रदीप कुमार, राज्य परियोजना समन्वयक, यु एन ई पी-जी ई एफ-पर्यावरण विज्ञान मंत्रालय-ए बी एस परियोजना, कर्नाटक जैवविविधता बोर्ड, बांगलूर ने 18 मार्च, 2017 को केन्द्र का दौरा किया।

श्री विस्मिजु विश्वनाथन, आइ एफ एस, जिला वन अधिकारी, कन्याकुमारी ने 9 फरवरी, 2017 को टूटिकोरिन अनुसंधान केन्द्र का दौरा किया।

पुरस्कार

ताराचंद कुमावत, समुद्री जैवविविधता प्रभाग, वेरावल क्षेत्रीय केन्द्र ने 18-19 फरवरी, 2017 के दौरान इलाहाबाद में आयोजित 19वीं भारतीय कृषि वैज्ञानिक एवं किसान कांग्रेस (आइ ए एस एफ सी) में युवा वैज्ञानिक पुरस्कार ग्रहण किया।

डॉ. जी. महेश्वरुडु, प्रधान वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष, क्रस्टेशियन मात्स्यिकी प्रभाग ने इंडिया इन्टरनेशनल फ्रेन्डशिप सोसाइटी द्वारा 25 मार्च, 2017 को नई दिल्ली में आयोजित "आर्थिक वृद्धि एवं राष्ट्रीय एकता" विषयक संगोष्ठी में राष्ट्रीय गौरव पुरस्कार ग्रहण किया।

एन एफ डी बी की सहायता से पर्ल स्पोट मछली संतति उत्पादन इकाई का उद्घाटन

उद्घाटन के दौरान पेर्ल स्पोट मछली संततियों का हस्तांतरण

स्थानीय रूप से पर्ल स्पोट मछली का उत्पादन बढ़ाए जाने के उद्देश्य से राष्ट्रीय मात्स्यिकी विकास बोर्ड (एन एफ डी बी) की निधिबद्धता और किसानों की सहभागिता से कृ वि कें द्वारा एरणाकुलम जिले में पेर्ल स्पोट मछली के संतति उत्पादन की इकाइयों की नेटवर्क विकसित की गयी। चुने गए किसानों को अपने घरों के आस पास के तालाबों में मछली संतति के उत्पादन में प्रशिक्षण दिया गया और इस तरह उत्पादित संततियों का वितरण कृ वि कें द्वारा किया जाएगा। इन इकाइयों को कृ वि कें की सैटलाइट संतति उत्पादन इकाइयों के रूप में मान्यता प्राप्त होने की वजह से किसान सीधा मछली संतति का विपणन कर सकता है। इसका उद्घाटन 5 जनवरी, 2017 को प्रोफसर के.वी. तोमस, सांसद, श्री वी.डी. सतीशन, एम एल ए द्वारा किया गया और किसानों को मान्यता प्रमाण पत्र और बिल बुक प्रदान किए गए। डॉ. ए. गोपालकृष्णन, निदेशक, भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, डॉ. श्रीनाथ दीक्षित, कृषि प्रौद्योगिकी प्रयोग अनुसंधान संस्थान, बंगलूरु, कृ वि कें से डॉ. षिनोज सुब्रमण्यन और डॉ. विकास पी.ए. भी उपस्थित थे।

ए एस सी आइ की सहकारिता से कुशलता प्रशिक्षण

चुने गए 20 लोगों के लिए "जलजीव पालन तकनीशियन" और "वर्मी कंपोस्ट उत्पादक" विषयों पर 27 फरवरी से 27 मार्च, 2017 तक की अवधि के दौरान 200 घंटों (25 दिवस) की दो प्रशिक्षण पाठ्यक्रम आयोजित किए गए। भारतीय कृषि कुशलता परिषद (ए एस सी आइ) द्वारा अनुमोदित परीक्षक व्यक्तियों की उपस्थिति में प्रशिक्षण निर्धारण परीक्षा भी आयोजित की गयी। प्रशिक्षण द्वारा प्रतिभागियों को संबंधित क्षेत्रों में स्टार्ट-अप प्रारंभ करने में मदद और आत्मविश्वास प्राप्त हुआ। यह प्रशिक्षण भारत के नौजवानों को उद्योग प्रासंगिक, कुशल एवं अर्थपूर्ण बनाने के लिए प्रधान मंत्री कौशल विकास योजना (पी एम के वी वाय) के अंतर्गत आयोजित किया गया।

किसान उत्पादक कंपनियों का पंजीकरण

कृषि एवं ग्रामीण विकास का राष्ट्रीय बैंक (एन ए बी ए आर डी) ने कृ वि कें एरणाकुलम को उत्पादक संगठन प्रोत्साहन संस्था (पी ओ पी आइ) के रूप में मान्यता दी। परिणामस्वरूप दो किसान उत्पादक कंपनियों, एक जायफल और दूसरा पोक्काली को 'पेरियार वैली स्पाइसेस किसान उत्पादक कंपनी लि.' और 'पोक्काली किसान उत्पादक कंपनी लि.' के नामों पर पंजीकरण किया गया।

कृषि विज्ञान केन्द्र की वैज्ञानिक सलाहकार समिति बैठक भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, कोच्ची में 6 जनवरी, 2017 को डॉ. ए. गोपालकृष्णन, निदेशक की अध्यक्षता में आयोजित की गयी। क्षेत्रीय परियोजना निदेशक डॉ. श्रीनाथ दीक्षित द्वारा एस ए सी के सदस्यों की उपस्थिति में किए गए कार्यों और आगे की कार्रवाइयों की पुनरीक्षा चर्चा आयोजित की गयी।

- **डॉ. ए. गोपालकृष्णन**, निदेशक ने मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थानों के ई एफ सी प्रलेखन के लिए मात्स्यिकी प्रभाग, के ए बी -II , पूसा, नई दिल्ली में 6 फरवरी, 2017 को आयोजित बैठक में भाग लिया।

  नई दिल्ली में 14 और 15 फरवरी, 2017 को आयोजित कृषि विश्वविद्यालयों के कुलपतियों और भा कृ अनु प के निदेशकों की बैठक में भाग लिया।

  सी एस आइ आर-एन आइ ओ, गोवा में 18 और 19 मार्च, 2017 को आयोजित टाइम सीरीस ओशियानोग्राफिक ओब्सर्वेशन्स ऑफ मुम्बई (टी एस ओ ओ एम) की बैठक में भाग लिया।

- **डॉ. आर. नारायणकुमार**, अध्यक्ष, एस ई ई टी टी प्रभाग ने नई दिल्ली में 6 और 7 फरवरी, 2017 को आयोजित 'मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थानों के ई एफ सी प्रलेखन' की बैठक और 28-30 मार्च, 2017 को 'सी एम एफ आर आइ की ई एफ सी, 2017-2020 का अंतिम रूप देने और प्रस्तुतीकरण' की बैठक में भाग लिया।

- **डॉ. के.एस. मोहम्मद**, अध्यक्ष, एम एफ डी ने के एम एफ आर अधिनियम और नियमों के संशोधन के लिए विशेषज्ञ समिति की बैठक और इस पर 16 जनवरी, 2017 को कोषिकोड, 17 जनवरी, 2017 को एरणाकुलम और 20 जनवरी, 2017 को कोल्लम में आयोजित तीन क्षेत्रीय स्तरीय कार्यशालाओं में और 14 फरवरी, 2017 को भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ में आयोजित राज्य स्तरीय कार्यशाला में भाग लिया।

  भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, कोच्ची में 10 जनवरी, 2017 को आयोजित मछुआरा मेले में भाग लिया।

  वाणिज्यिक तौर पर मोती उत्पादन इकाइयों की स्थापना से संबंधित समस्याओं पर चर्चा करने के लिए 27 जनवरी, 2017 को पोर्ट ब्लेयर में माननीय ले. गवर्नर, आन्डमान एवं निकोबार द्वीप समूह की अध्यक्षता में आयोजित विविध स्थानों के निजी उद्यमियों की बैठक में भाग लिया।

  तृप्रयार, तृश्शूर में 4 फरवरी, 2017 को आयोजित केरल प्रदेश मत्स्यतोषिलाली कांग्रेस यूनिट से संबंधित एक दिवसीय नेतृत्व अध्ययन अभियान में भाग लिया।

  सी एस आइ आर-राष्ट्रीय महासमुद्र विज्ञान संस्थान क्षेत्रीय केन्द्र, कोच्ची में 10-11 फरवरी, 2017 को केरल के मडबैंक: वर्तमान स्थिति, समस्याएं और सामाजिक चिंताएं विषय पर आयोजित राष्ट्रीय कार्यशाला में भाग लिया।

  कृ वि कें में कुशलता विकास एवं उद्यमिता मंत्रालय द्वारा आयोजित "भारत की कृषि एवं कुशलता परिषद के जलजीव पालन तकनीशियन (ए एस सी आइ)" विषयके प्रमाणीकरण पाठ्यक्रम के दौरान 10 मार्च, 2017 को "शुक्ति पालन और व्यवहार" विषय पर सत्र का आयोजन किया।

  समुद्री जीव विज्ञान, सूक्ष्मजीव विज्ञान और जैव रसायन विभाग, कोचीन विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कोच्ची द्वारा 16-17 मार्च, 2017 को समुद्री पारिस्थितिक तंत्र स्वास्थ्य विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया।

  भा कृ अनु प-सी आइ एफ टी, कोच्ची में 'किशोर मछली पकड़ का शमन-आगे का रास्ता' विषय पर 25 मार्च, 2017 को आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में आमंत्रित व्याख्यान दिया।

- **डॉ. वी. कृपा**, अध्यक्ष, एफ ई एम डी ने श्रीनारायणा कॉलेज, चेर्तला में 2 फरवरी, 2017 को आयोजित विश्व आर्द्र भूमि दिवस समारोह का उद्घाटन किया और 'आर्द्र भूमि-आपदा के प्रति प्राकृतिक सुरक्षा' विषय पर व्याख्यान दिया।

  के यु एफ ओ एस में 13 फरवरी, 2017 को आयोजित अकादमिक परिषद बैठक में भाग लिया।

  आइ एन सी ओ आइ एस की 6 मार्च, 2017 को आयोजित आर ए सी बैठक में भाग लिया और पर्यावरण विज्ञान मंत्रालय द्वारा निधिबद्ध परियोजना की प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत किया।

- **डॉ. पी.यु. ज़क्करिया**, अध्यक्ष, डी एफ डी ने एन आइ सी आर ए परियोजना के अंतर्गत नई दिल्ली में 23 फरवरी, 2017 को आयोजित बुद्धिशीलता कार्यशाला में भाग लिया।

- **डॉ. के.के. जोषी**, अध्यक्ष, समुद्री जैवविविधता प्रभाग ने तिरुवनंतपुरम में 23-24 फरवरी, 2017 को आयोजित 3वां राष्ट्रीय जैवविविधता सम्मेलन में आमंत्रित व्याख्यान दिया।

- **डॉ. पी. कलाधरन**, प्रधान वैज्ञानिक ने भा कृ अनु प-सी आइ एफ टी, कोच्ची में 9 जनवरी, 2017 को आयेजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में समुद्री शैवाल समुद्री संवर्धन विषय पर व्याख्यान दिया।

- **डॉ. पी. कलाधरन**, और **डॉ. डी. प्रेमा** (प्रधान वैज्ञानिक गण) ने लिसी आस्पताल के सामाजिक कार्य विभाग और कोच्ची मुनिसिपल कार्पोरेशन के सहयोग से "सामुदायिक एवं पर्यावरणीय टिकाऊपन का प्रोत्साहन" विषय पर आयोजित आउटरीच कार्यक्रम में भाग लिया।

- **डॉ. ए.पी. दिनेशबाबु**, प्रधान वैज्ञानिक ने भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ में 17-18 जनवरी, 2017 को आयेजित एन आइ सी आर ए पुनरीक्षण बैठक में भाग लिया।

- **डॉ. प्रतिभा रोहित**, प्रभारी वैज्ञानिक, मांगलूर अनुसंधान केन्द्र ने एस ए टी टी यु एन ए परियोजना के संबंध में आइ एन सी ओ आइ एस, हैदराबाद में 05-11 मार्च, 2017 के दौरान आयोजित पुनरीक्षण बैठक में भाग लिया।

  रत्नगिरी क्षेत्र में तारली के सुधार परियोजना के लिए 24 मार्च, 2017 को कोच्ची में आयोजित हितधारकों की बैठक में भाग लिया।

  कृषि से संबंधित संसदीय स्थायी समिति के निरीक्षण के संबंध में अंतिम रूप देने के लिए 11 मार्च, 2017 को बेंगलूरु में सचिव, कृषि, कर्नाटक सरकार द्वारा बुलायी गयी बैठक में भाग लिया।

- **डॉ. के.एस. मोहम्मद**, **डॉ. प्रतिभा रोहित**, **डॉ. ई.एम. अब्दुसमद**, **डॉ. यु. गंगा** (प्रधान वैज्ञानिक गण), **श्री के. मोहम्मद कोया**, **श्री सुबल कुमार राउल** (वैज्ञानिक गण) ने भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, कोच्ची में 27 मार्च, 2017 को आयोजित लक्षद्वीप ट्यूना मात्स्यिकी के एम एस सी प्रमाणीकरण की परामर्श बैठक में भाग लिया।

- **डॉ. के.के. फिलिपोस**, प्रभारी वैज्ञानिक, कारवार अनुसंधान केन्द्र ने मांगलूर में कर्नाटक जैवविविधता बोर्ड द्वारा 18 मार्च, 2017 को आयोजित बैठक में भाग लिया।

- **डॉ. आर. नारायणकुमार**, प्रधान वैज्ञानिक, **नारायण जी वैद्या**, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी और **सोनाली एस. मद्दोलकर**, वरिष्ठ तकनीकी सहायक ने सी एम एफ आर आइ मद्रास अनुसंधान केन्द्र, चेन्नई में 6-8 फरवरी, 2017 को आयोजित "प्रवाल झाड़ी द्वीप आवास तंत्र का निर्धारण एवं मूल्यांकन" की समापन कार्यशाला में भाग लिया।

- **डॉ. शुभदीप घोष**, प्रभारी वैज्ञानिक, विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केन्द्र ने हैदराबाद में 28 जनवरी, 2017 को मात्स्यिकी आयुक्त एवं सचिव, आंध्रा प्रदेश द्वारा आयोजित बैठक में भाग लिया।

- **डॉ. एस.एस. राजु**, प्रधान वैज्ञानिक ने यु ए एस, बांगलूर में 30 जनवरी, 2017 को "संपदा उपयोग क्षमता और टिकाऊपन बढ़ाने के लिए क्षेत्रीय फसल योजना" विषयक भा कृ अनु प-एस एस एन परियोजना की नीति सिफारिश एवं वितरण कार्यशाला में भाग लिया।

- **डॉ. पी. लक्ष्मीलता**, प्रभारी वैज्ञानिक, मद्रास अनुसंधान केन्द्र ने एफ आइ एम एस यु एल - II के संबंध में मात्स्यिकी आयुक्त का कार्यालय, चेन्नई में 18 जनवरी, 2017 को आयोजित विश्व बैंक के सदस्यों की बैठक में भाग लिया।

  मात्स्यिकी आयुक्त का कार्यालय, चेन्नई में 1 फरवरी, 2017 को आयोजित भारतीय मात्स्यिकी सर्वेक्षण की 24वी परामर्श ग्रुप बैठक में भाग लिया।

- **डॉ. जो किषकूडन**, प्रधान वैज्ञानिक ने 30 जनवरी, 2017 को आयोजित मद्रास विश्वविद्यालय की निरीक्षण समिति की बैठक में भाग लिया।

  तमिल नाडु के तिरुवल्लूर जिले के तटीय मत्स्यन गाँवों के 55 मछुआरा युवकों के लिए

सेंजियम्मन नगर, पुषवरकाड में 17-18 जनवरी, 2017 को आयोजित समुद्री पिंजरा मछली पालन में कुशलता विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया।

सी आइ बी ए, चेन्नई में 27 जनवरी, 2017 को आयोजित 49वीं संस्थान प्रबंध समिति बैठक में भाग लिया।

मात्स्यिकी आयुक्त का कार्यालय, चेन्नई में 6 मार्च, 2017 को डॉ. रिचार्ड, मात्स्यिकी विशेषज्ञ, आइ एफ ए डी, एफ ए ओ, रॉम के साथ आयोजित बैठक में भाग लिया।

एफ आइ एम एस यु एल-II के संबंध में मात्स्यिकी आयुक्त का कार्यालय, चेन्नई में 17 मार्च, 2017 और 24 मार्च, 2017 को आयोजित पुनरीक्षण बैठकों में भाग लिया।

- **डॉ. पी. स्वाति लक्ष्मी**, प्रधान वैज्ञानिक ने एस आइ एफ एफ एस (मछुआरा संघों का दक्षिण भारतीय फेडरेशन) और एम ए ई आर एस के ग्रुप ऑफ कंपनीस की सहकारिता से तिरुवनंतपुरम में 11 जनवरी, 2017 को "समुद्र में समुद्री सुरक्षा" विषय पर आयोजित परामर्श बैठक में भाग लिया।
- **डॉ. टी.एम. नजमुदीन**, वरिष्ठ वैज्ञानिक और **डॉ. जी. रोजित**, अनुसंधान सहायक, एन आइ सी आर ए ने भा कृ अनु प-आइ ए एस एस, भोपाल में 14-18 फरवरी, 2017 के दौरान जलवायु परिवर्तन के प्रभाव में फसल सिमुलेशन पर आयोजित कार्यशाला एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया।
- **डॉ. टी.एम. नजमुदीन**, वरिष्ठ वैज्ञानिक, **डॉ. जी. रोजित**, अनुसंधान सहायक, एन आइ सी आर ए और **श्री एस. अजित**, एस आर एफ, एन आइ सी आर ए ने कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय, बेंगलूरु में 21-24 फरवरी, 2017 के दौरान आयोजित XIII वां कृषि विज्ञान कांग्रेस 2017 में भाग लिया।
- **डॉ. पी. षिनोज**, वैज्ञानिक ने एन ए ए आर एम, हैदराबाद में 13-15 फरवरी, 2017 के दौरान 'भा कृ अनु प के नोडल अधिकारियों द्वारा प्रशिक्षण कार्यक्रमों के प्रभावकारी कार्यान्वयन के लिए क्षमता वर्धन कार्यक्रम' विषय पर आयोजित मानव संपदा विकास प्रशिक्षण में भाग लिया।
- **डॉ. श्याम एस. सलिम**, प्रधान वैज्ञानिक ने भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ में 10 जनवरी, 2017 को केरल के परंपरागत मछुआरों के लिए एक दिवसीय कार्यशाला का समन्वयन किया।

  जलवायु परिवर्तन के शमन और अनुकूलत में कृषि वानिकी कार्यनीतियों पर 21 मार्च, 2017 को आयोजित राष्ट्रीय कार्यशाला में प्रस्तुतीकरण पेश किया।
- **डॉ. विद्या जयशंकर**, वरिष्ठ वैज्ञानिक, और **डॉ. श्रीनिवास राघवन**, वैज्ञानिक ने भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ टूटिकोरिन अनुसंधान केन्द्र में 08-10 जनवरी, 2017 के दौरान मात्स्यिकी के लिए आण्विक जीवविज्ञान एवं जैवप्रौद्योगिकी विषय पर आयोजित राष्ट्रीय प्रशिक्षण के पेशेवरों को व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया।
- **डॉ. सी.पी. सुजा**, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने मनोन्मणियम सुन्दरनार विश्वविद्यालय (एम एस यु) में, तिरुनेलवेली में 20 जनवरी, 2017 को आयोजित अनुसंधान सलाहकार बोर्ड की बैठक में भाग लिया।
- **डॉ. ए.के. अब्दुल नाज़र**, प्रभारी वैज्ञानिक, मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र ने पशु पालन, डेरी एवं मात्स्यिकी विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली में संयुक्त सचिव (मात्स्यिकी) की अध्यक्षता में आयोजित 22 फरवरी, 2017 को आयोजित बैठक में एन एफ डी बी परियोजना प्रस्ताव प्रस्तुत किया।
- **डॉ. आर. जयकुमार**, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने भीमावरम, आंध्रा प्रदेश में 10-15 फरवरी, 2017 के दौरान 'जलकृषि से लाभ' विषय पर आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया।

  रामनाथपुरम जिले में पिंजरा मछली पालन की गतिविधियों के पुनरीक्षण के लिए मात्स्यिकी आयुक्त, तमिल नाडु सरकार द्वारा 31 मार्च, 2017 को आयोजित बैठक में भाग लिया।
- **डॉ. बी. जोण्सन**, वैज्ञानिक ने रामनाथपुरम में 3 फरवरी, 2017 को आयोजित जी ओ एम बी आर टी की निधिबद्ध परियोजना की पुनरीक्षण बैठक में भाग लिया।
- **डॉ. आर. शरवणन**, वैज्ञानिक ने पुदुच्चेरी में 9-12 मार्च, 2017 के दौरान आयोजित 4वां जैवविविधता कांग्रेस में भाग लिया।
- **डॉ. प्रवीण दुबे** और **श्रीमती सोनाली एस. महोलकर** ने बेंगलूरु में 21-23 फरवरी, 2017 के दौरान आयोजित XIII वां कृषि विज्ञान कांग्रेस 2017 में भाग लिया।
- **श्री नवीन कुमार यादव**, सहायक निदेशक (रा भा) और **श्रीमती ई.के. उमा**, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी (हिन्दी) ने सी आइ एफ एन ई टी, कोच्ची में 8 मार्च, 2017 को आयोजित कोच्ची न रा का स के अधीनस्थ विभिन्न केन्द्रीय सरकार संगठनों के हिन्दी अधिकारियों की बैठक में भाग लिया।

अनुसंधान सलाहकार समिति बैठक

संस्थान की अनुसंधान सलाहकार समिति (आर ए सी) की 21वीं बैठक 27-28 फरवरी, 2017 के दौरान कोच्ची में आयोजित की गयी। प्रोफसर एन.आर. मेनन, सह-अध्यक्ष, निदेशक बोर्ड, नानसेन पर्यावरणीय अनुसंधान केन्द्र (भारत) समिति के अध्यक्ष रहे। अन्य सदस्यों में डॉ. एन. रामय्या, मुख्य वैज्ञानिक, राष्ट्रीय महासमुद्र विज्ञान संस्थान, डॉ. ए.आर. तिरुनावुक्करशु, प्रधान वैज्ञानिक (सेवानिवृत्त), सी आइ बी ए, डॉ. मदन मोहन, ए डी जी (समुद्री मात्स्यिकी, सेवानिवृत्त), भा कृ अनु प एवं मात्स्यिकी निदेशक, पंजाब, डॉ. एस.के. चक्रबर्ती, प्रधान वैज्ञानिक (सेवानिवृत्त), सी आइ एफ ई, डॉ. वी.एन. संजीवन, भूतपूर्व निदेशक, समुद्री जैव संपदा केन्द्र, डॉ. प्रवीण पुत्रा, ए डी जी (समुद्री मात्स्यिकी), भा कृ अनु प, डॉ. ए. गोपालकृष्णन, निदेशक, भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, डॉ. पी. विजयगोपाल, अध्यक्ष, समुद्री जैवप्रौद्योगिकी प्रभाग एवं सदस्य सचिव सम्मिलित थे।

अनुसंधान सलाहकार समिति बैठक

डॉ. ए. गोपालकृष्णन ने अपने भाषण में यह व्यक्त किया कि संस्थान के 11 अनुसंधान केन्द्र, जिनमें डिघा में स्थित नया अनुसंधान केन्द्र सम्मिलित है, और 17 क्षेत्र केन्द्र, जिनमें मान्डवी और पारादीप के क्षेत्र केन्द्र भी सम्मिलित हैं, कार्यरत हैं। संस्थान का नया अधिदेश है, 32 गृहांदर, 30 बाहरी वित्त पोषित और 13 परामर्श परियोजनाएं चालू हैं। बैठक में विभिनन प्रभागों की अनुसंधान उपलब्धियों पर प्रकाश डाला गया और बाद में संबंधित प्रभागों के अध्यक्षों और प्रभारी वैज्ञानिकों ने इस पर प्रस्तुतीकरण पेश किया। डॉ. पी. विजयगोपाल, सदस्य सचिव ने 20वीं आर ए सी के सिफारिशों पर की गयी कार्रवाइयों की रिपोर्ट प्रस्तुत की।

मानव संपदा विकास

कार्यशाला/प्रशिक्षण/सम्मेलन आदि	तारीख एवं स्थान	भागीदार
'क्षमता वर्धन एवं व्यवहार कौशल' पर प्रशिक्षण	4-10 जनवरी, 2017 एन ए ए आर एम, हैदराबाद	श्री के.एन. मुरली, वैयक्तिक सहायक
'सांख्यिकी आनुवंशिकी एवं जीनोमिक्स में आधुनिक विश्लेषणात्मक तकनीक' पर प्रशिक्षण	17 जनवरी-6 फरवरी, 2017 आइ ए एस आर आइ, नई दिल्ली	श्री एम. राजकुमार, वैज्ञानिक
तकनीकी कर्मचारियों के लिए 'प्रयोगशाला एवं फील्ड के उपकरणों का अनुरक्षण' पर प्रशिक्षण	17-30 जनवरी, 2017 भा कृ अनु प-सी आइ एफ ई, मुम्बई	श्री पी. सायूज, तकनीकी सहायाक श्री बिनोय भास्करन, तकनीकी सहायक
'कृषि पोषण एवं खाद्य प्रौद्योगिकी' पर प्रशिक्षण	19-28 जनवरी, 2017 भा कृ अनु प-सी आइ बी ए, चेन्नई	श्री अडनान हुसैन गोरा, वैज्ञानिक
'जलजीव पालन में औषधीय खाद्य का प्रयोग पर प्रशिक्षण	13-23 फरवरी, 2017 भा कृ अनु प-सी आइ एफ ई, मुम्बई	श्री एस. चन्द्रशेखर, वैज्ञानिक
'एन आइ सी के ई-खरीद के कार्यान्वयन पर सी पी पी पोर्टल द्वारा समाधान' पर प्रशिक्षण	22-23 फरवरी, 2017 आइ ए एस आर आइ, नई दिल्ली	श्रीमती पोन्नम्मा राधाकृष्णन, ए ए ओ श्रीमती जेन्नी सी.एम., ए ए ओ श्री मनु वी.के., तकनीकी अधिकारी (कार्यक्रम सहायक कंप्यूटर) श्रीमती सौम्या सुरेन्द्रन, सहायक
'प्रोटिओमिक्स पहुँच' पर महिला वैज्ञानिकों के लिए प्रशिक्षण	2-6 मार्च, 2017 कृषि विज्ञान संस्थान, वाराणसी	श्रीमती सलोनी शिवम, वैज्ञानिक

कार्मिक समाचार

स्थानांतरण

नाम व पदनाम	से	तक	प्रभावी तारीख
डॉ. ज्ञान रंजन दास, वैज्ञानिक	वेरावल क्षेत्रीय केन्द्र	डिघा अनुसंधान केन्द्र	14.03.2017
श्रीमती स्वातिप्रियंका सेन दास, वैज्ञानिक	वेरावल क्षेत्रीय केन्द्र	डिघा अनुसंधान केन्द्र	14.03.2017
श्रीमती एस. सूर्या, वैज्ञानिक	मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र	विषिंजम अनुसंधान केन्द्र	13.03.2017
श्री डी. पुगषेन्दी, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी	भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ कोच्ची	मद्रास अनुसंधान केन्द्र	06.03.2017
श्री सी.जी. उल्वेक्कर, वरिष्ठ तकनीकी सहायक	कारवार अनुसंधान केन्द्र	मांगलूर अनुसंधान केन्द्र	06.03.2017

पदोन्नतियाँ

नाम व पदनाम	पदोन्नत पद	केन्द्र	प्रभावी तारीख
श्रीमती के.पी. शालिनी, तकनीकी अधिकारी	वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी	भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	01.01.2014
श्री सुखदेव बार, तकनीकी अधिकारी	वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी	पुरी क्षेत्र केन्द्र	03.02.2015
श्री के.जी. राधाकृष्णन नायर वरिष्ठ तकनीकी सहायक (मोटोर ड्राइवर)	तकनीकी अधिकारी (मोटोर ड्राइवर)	भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	29.06.2016
श्री एम.एम. भास्करन, वरिष्ठ तकनीकी सहायक	तकनीकी अधिकारी	कालिकट अनुसंधान केन्द्र	01.01.2016
श्री जयदेव एस. होटागी, वरिष्ठ तकनीकी सहायक	तकनीकी अधिकारी	मुम्बई अनुसंधान केन्द्र	14.05.2016
श्री एन. भूमिनाथन, तकनीकी सहायक	वरिष्ठ तकनीकी सहायक	कालिकट अनुसंधान केन्द्र	16.12.2015
श्री पी. विल्लन, तकनीकी सहायक	वरिष्ठ तकनीकी सहायक	मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र	11.01.2016
श्री एच.सी. हिज़क्किएल, तकनीकी सहायक	वरिष्ठ तकनीकी सहायक	भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	09.04.2016
श्री एस.वी. सुब्ब राव, तकनीकी सहायक	वरिष्ठ तकनीकी सहायक	मद्रास अनुसंधान केन्द्र	31.03.2016
श्री सी. चन्द्रन, तकनीकी सहायक	वरिष्ठ तकनीकी सहायक	कालिकट अनुसंधान केन्द्र	01.02.2016

श्री पी.एस. अलोशियस, तकनीकी सहायक	वरिष्ठ तकनीकी सहायक	भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	25.10.2015
श्री शशिकांत आर. राव, तकनीकी सहायक (मोटोर ड्राइवर)	वरिष्ठ तकनीकी सहायक (मोटोर ड्राइवर)	मुम्बई अनुसंधान केन्द्र	29.06.2016
श्री पी. हर्षकुमार तकनीकी सहायक (मोटोर ड्राइवर)	वरिष्ठ तकनीकी सहायक (मोटोर ड्राइवर)	मांगलूर अनुसंधान केन्द्र	29.06.2016
श्री एच.एम. भिन्ट, वरिष्ठ तकनीशियन	तकनीकी सहायक	वेरावल क्षेत्रीय केन्द्र	17.11.2015
श्री के. सोलमन, टी-।-3 (तकनीकी सहायक)	टी-।-3 (तकनीकी सहायक) टी-।।-3 (तकनीकी सहायक)	भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	01.01.2006 01.01.2012
श्रीमती पी.ए. फेबीना, उच्च श्रेणी लिपिक, कोच्ची	कनिष्ठ लेखा अधिकारी	मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र	22.02.2017

अंतर संस्थानीय सथानांतरण

नाम एवं पदनाम	से	तक	प्रभावी तारीख
डॉ. पी. जयशंकर, प्रधान वैज्ञानिक	भा कृ अनु प-सी आइ एफ ए, भुवनेश्वर	भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	30.01.2017
डॉ. आइ. राजेन्द्रन, प्रधान वैज्ञानिक	भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र	गन्ना अनुसंधान संस्थान (एस बी आइ) कोयम्बत्तूर	18.03.2017 को कार्यमुक्त
श्रीमती पी. हेमशंकरी, वैज्ञानिक	भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ मद्रास अनुसंधान केन्द्र, चेन्नई	भा कृ अनु प-केन्द्रीय संग्रहणोत्तर इंजिनीयरी एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, लुधियाना	31.03.2017 को कार्यमुक्त
डॉ. (श्रीमती) आर. गीता, वैज्ञानिक	भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ मद्रास अनुसंधान केन्द्र, चेन्नई	भा कृ अनु प-केन्द्रीय खारा पानी जलजीव पालन संस्थान, चेन्नई	31.03.2017 को कार्यमुक्त

अधिवर्षिता पर सेवानिवृत्तियाँ

श्री एन. राममूर्ति
वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी
31.01.2017
मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र

श्री वी. मोहनन
प्रशासनिक अधिकारी
31.03.2017
भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, कोच्ची

श्रद्धांजलि

श्री नन्दकुमार राव
वरिष्ठ तकनीकी सहायक
12.03.2017
भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, कोच्ची

श्रीमती एम. सुन्दरी
स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ
13.03.2017
मद्रास अनुसंधान केन्द्र

इंडियनय फिशरीस एंड अक्वाकल्चर फोरम

11वीं इंडियन फिशरीस एंड अक्वाकल्चर फोरम

मात्स्यिकी और जलजीव पालन में नवाचारों को बढ़ावा - टिकाऊपन एवं सुरक्षा पर केन्द्रित

आइ एफ ए एफ के बारे में

आर्थिक, सामाजिक एवं पौष्टिकता के पहलुओं में अवसर प्रदान करने की वजह से मात्स्यिकी भारत सहित कई देशों में उभरता हुआ क्षेत्र बन जा रहा है। भारत में लगभग 14 मिलियन मछुआरों एवं किसानों को आय तथा रोज़गार का सशक्त आश्रय के रूप में इस सेक्टर को मान्यता प्राप्त हुई है। भारत में मछुआरों और उनके परिवारों के जीवन तथा आजीविका में सुधार लाने हेतु देश की मात्स्यिकी संपत्तियों की टिकाऊ उपयोगिता द्वारा नील क्रांति को कायम करने के लिए सरकार की नीतियों को अनुकूल बनाया गया है। फिर भी, हाल के वर्षों के दौरान इस सेक्टर में अति मत्स्यन, मछली उत्पादन में स्थिरता, जलवायु परिवर्तन का प्रभाव, जलजीव पालन में रोग ग्रस्तता और समुद्री खाद्य की गुणता और विपणन से संबंधित मामलों जैसी कई समस्याएं सामने आयी हैं। ये सभी समस्याएं हमारी उपलब्धियों, क्षमताओं, चुनौतियों एवं अवसरों की जायजा लेते हुए राष्ट्रीय स्तर पर एकीकृत एवं कार्यनीति परख योजना तैयार करने की आवश्यकता की ओर इशारा करती हैं। 11वीं इंडियन फिशरीस एंड अक्वाकल्चर फोरम एशियन फिशरीस सोसाइटी - भारतीय शाखा (ए एफ एस आइ बी) के संयुक्त सहयोग से आयोजित की जाती है और भा कृ अनु प-केन्द्रीय मात्स्यिकी प्रौद्योगिकी संस्थान, कोचीन इस आयोजन का मंच प्रदान करेगा।

1. मात्स्यिकी संपदाएं: आनुवंशिकी, जैवविविधता एवं प्रबंधन

तकनीकी सत्र

2. टिकाऊ मात्स्यिकी के लिए मत्स्यन प्रणालियाँ
3. मात्स्यिकी जीवविज्ञान, विष विज्ञान एवं पर्यावरण
4. जलजीव पालन उत्पादन
5. जलीय जीव स्वास्थ्य प्रबंधन
6. मछली में मूल्य वर्धन: मछली प्रसंस्करण एवं पैकिंग में अवसर
7. सुरक्षित मछली: गुणता, जोखिम निर्धारण एवं विनियमन
8. ब्लू बायो-इकनोमी के लिए फिशोमिक्स एवं सीमांत विज्ञान
9. सामाजिक-आर्थिकी, जेन्डर, क्षमता वर्धन और आजीविका
10. मात्स्यिकी विपणन, नीति एवं शासन

अधिक विवरण के लिए वेब साइट www.11ifaf.in देखें

उद्देश्य

"मात्स्यिकी और जलजीव पालन में नवाचारों को बढ़ावा - टिकाऊपन एवं सुरक्षा" विषय आयोजित की जाने वाली 11वीं इंडियन फिशरीस एंड अक्वाकल्चर फोरम के मुख्य उद्देश्य:

- चालू अनुसंधान उपलब्धियों का पर्यालोचन और इस सेक्टर में अनुसंधान एवं विकास की आवश्यकताओं की पहचान
- मछली के टिकाऊपन और सुरक्षा से संबंधित मामलों का संबोधन करने हेतु नवाचार कौशल का परिपोषण
- मात्स्यिकी सेक्टर को प्रभावित किए जाने वाले मुख्य मामलों का संबोधन करने हेतु चिंतन, विकास तथा आवश्यकता पर आधारित अनुसंधान करने के लिए वैज्ञानिकों को प्रोत्साहित करना
- मात्स्यिकी विज्ञान में हुए अनुसंधान विकासों का पुनरीक्षण और इन प्रौद्योगिकियों के हस्तांतरण और शोधन के लिए कार्यनीतियाँ विकसित करना

स्थान एवं तारीख

11वीं आइ एफ ए एफ ले मेरीडिएन, कोच्ची, केरल में 21-24 नवंबर, 2017 को आयोजित की जाएगी। एशियन फिशरीस सोसाइटी - भारतीय शाखा (ए एफ एस आइ बी) के तत्वावधान में भा कृ अनु प-सी आइ एफ टी इसका आयोजन करेगा।

समानांतर कार्यक्रम

- ए एफ एस के जी ए एफ अनुभाग द्वारा भारत के जलजीव पालन एवं मात्स्यिकी सेक्टर में जेन्डर (जी ए एफ-इंडिया) पर परिचर्चा
- जलजीव पालनकारों और समुद्री खाद्य प्रसंस्करण करने वालों की निर्वाचिका सभा-जलजीव पालनकारों, उद्यमियों, वैज्ञानिकों, नीति निर्माताओं और अन्य हितधारकों की आपसी चर्चा
- नयी सीमा की ढूँढ़: भारत में वर्धित समुद्री खाद्य खपत - अंतर्राष्ट्रीय समुद्री खाद्य पेशेवर समूह द्वारा आयोजित
- महासागर सहभागिता परियोजना-बंगाल उपसागर (ओ पी पी-बी ओ बी) द्वारा - "बंगाल उपसागर में अधिकतर प्रवासी मछली प्रजातियों का प्रबंधन" पर क्षेत्रीय संवाद
- प्लाइ माउथ समुद्री प्रयोगशाला (पी एम एल), यु के द्वारा - मात्स्यिकी संपदाओं का पारितंत्र पर आधारित प्रबंधन विषय पर परिचर्चा

संपर्क करें
डॉ. रविशंकर सी.एन.
(संयोजक, 11वीं आइ एफ ए एफ), निदेशक, भा कृ अनु प-केन्द्रीय मात्स्यिकी प्रौद्योगिकी संस्थान, विल्लिंडन आइलेन्ड, मत्स्यपुरी (पी.ओ.), कोच्ची - 682 029, केरल, भारत। दूरभाष (कार्यालय): 0091-0484-2412300, फैक्स: 0091-2668212, ई-मेल: 11thifaf@gmail.com

भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ में प्लेटिनम जयंती समारोह 2017

सी एम एफ आर आइ
CMFRI

कडलमीन

सी एम एफ आर आइ समाचार

कडलमीन, सी एम एफ आर आइ समाचार केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, कोच्ची का तिमाही प्रकाशन है। यह प्रकाशन तिमाही के दौरान संस्थान की प्रमुख कार्यविधियों पर विवरण देने के साथ साथ अनुसंधान क्षेत्र की नई गतिविधियों और सफलताओं पर प्रकाश डालता है और प्रोद्योगिकी जानकारियों को मछुआरा समुदाय तक विकीर्णन करता है।